Darshan

दर्शन

Naresh Vaidya

—डा० नरेश वैद्य

H
813.31
V 14 D

"दर्शन"

प्रथम संस्करण : सितम्बर 1988

मुल्य : दस रुपये

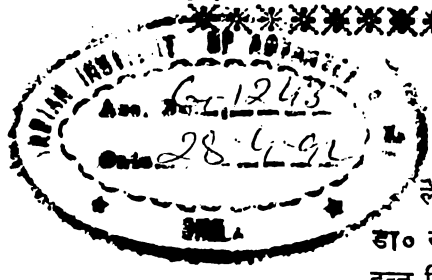

813.31
V 14 D

लेखक
डा० नरेश वैद्य
दन्त चिकित्सक
रैफरल हस्पताल सरकाघाट
(मण्डी हि० प्र०)

Library IIAS, Shimla
H 813.31 V 14 D
G1243

सर्वाधिकार सुरक्षित लेखक अधीन

मुद्रक : अजय प्रिन्टर्ज, सरकाघाट, जिला मण्डी, (हि० प्र०)

विषय सूची

क्रमांक		पृष्ट संख्या
1.	मेरी माँ	5
2.	मण्डी का सन्त	9
3.	कैदी	13
4.	डा० सौजु राम	17
5.	पहाड़ी टोपी वीर भद्र जी और मैं ।	21
6.	अपंग	25
7.	बेताज बादशाह	29
8.	सावधान : कृष्ण पैदा हो चुका है ।	34
9.	दर्शन	38
10.	शक्ति	44
11.	मण्डी का अभिताभ	50
12.	पापी	55
13.	"आकांक्षा"	59
14.	भूखा वचपन	67
15.	डाक्टर डिस्पैंसरी का	71
16.	पदयात्रा	74
17.	भीड़	77

दो शब्द

डॉ० नरेश वैद्य यद्यप व्यवसाय में कुशल दन्त चिकित्सक हैं परन्तु स्वभाव में वे अत्यन्त सफल लेखक हैं । ये अपने स्कूला जीवन से ही संवेदनशील भावुक हृदय रहे हैं, इससे उनकी प्रत्येक रचनाओं में संवेदनशीलता और उसे सरल स्वभाविक शब्दों में अभिव्यक्त करने की दिव्य क्षमता है। इनकी सभी रचनाएं चाहे वे गद्य-पद्य के कहानी रुप में हों, निबन्ध रुप में हो या पत्र रुप में, लेखन कला के सुन्दर उदाहरण हैं। जिन में उनके ही जीवन का अर्न्तद्वन्द्व, आज के समाजिक सन्दर्भ में उन की अनुभूत पीड़ीएं प्रकट हुई हैं। वास्तव में डॉ० नरेश वैद्य लेखक के रुप में हिन्दी साहित्य जगत में अपनी सूक्ष्म उदात्त भावनाओं को व्यक्त करने की नवीन विद्या को लेकर प्रकट हुए हैं। सभी पाठक उन की इस नवीन विद्या से प्रभावित हुए हैं।

आज के राजनैतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में जिस साफगोई से जो कुछ लिखा है उस से उदीयमान् नए लेखक पर गर्व होता है।

मण्डी हिमाचल में प्रकाशित होने वाला हिन्दी साप्ताहिक "शक्ति दर्शन" डॉ० नरेश वैद्य का विशेषतः आभारी है क्योंकि उन की स्वयंस्फूर्त रचनाओं का प्रथम उन्मेष उसी साप्ताहिक में हुआ है। लेखक की बहुत सी रचनाएं 'शक्ति दर्शन' में प्रकशित हो चुकी हैं और अब लेखक ने अपनी प्यारी रचनाओं का संग्रह 'दर्शन' के नाम से ही प्रकाशित कर सभी पाठकों से आदर लिया है। लेखक ने अपने जीवन की गहराईयों में अर्न्तद्वन्द्व के दर्शन किए हैं, वहां

उन का भावानात्मक जगत् का जीवन दर्शन है जो अब 'दर्शन' के संग्रह के रुप में लोकार्पित हुआ है । हम समझते हैं कि लेखक का यह सराहनीय प्रयास सभी को शक्ति दर्शन करवायेगा और भविष्य में अधिक सामर्थ्य के साथ सामाजिक भूमिका में आयाम स्थापित करेगा । 'शक्ति दर्शन' इस अवसर के लिए शुभ कामनाएं देता है ।

धन्यवाद ।

निवेदक,

दिनांक 9 सितम्बर 1988

हुताशन शास्त्री
सम्पादक—शक्ति दर्शन
हिन्दी साप्ताहिक,
182/2, पुरानी मण्डी
(हिमाचल प्रदेश)

डॉ० नरेश वैद्य रचित "दर्शन" के विमोचन अवसर पर

माननीय सागर चन्द नैयर शिक्षा मन्त्री हि. प्र. द्वारा

1. मुझे डॉ० नरेश वैद्य, दन्त चिकित्सक, राजकीय चिकित्सालय, सरकाघाट द्वारा लिखित पुस्तक "दर्शन" का विमोचन करते हुए अतीव हर्ष अनुभव हो रहा है।

2 "दर्शन" 15 लघु कथाओं एवं 2 कविताओं से युक्त एक लाभदायक एवं रोचक पुस्तक है। पुस्तक के पात्र मुख्यतः हिमाचली हैं जो लेखक द्वारा जीवन की विभिन्न राहों से चुने गए हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पाठक इस पुस्तक से अत्याधिक लाभ उठायेंगे तथा इससे लोगों को भावनात्मक एकता को प्रोत्साहन मिलेगा।

3. मैं डॉ० वैद्य के विषय में विशेष प्रशंसनीय शब्द कहना चाहुंगा जिन्होंने एक व्यस्त दन्त चिकित्सक होते हुए भी अपने अतिरिक्त समय को रचनात्मक कार्यों में लगाकर उसका सदुपयोग किया।

4. मैं लेखक डॉ० वैद्य को उनके उत्तम प्रयास पर हार्दिक बधाई देता हूं तथा उन्हें भविष्य में अपने पवित्र कार्य तथा अपनी रचनाओं द्वारा लोगों में साहित्यिक जागृति लाने के प्रयास को जारी रखने का आग्रह करता हूं। मुझे यह भी पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक को बहुत से घरों एवं पुस्तकालयों में गौरव का स्थान प्राप्त होगा।

दिनांक 9 सितम्बर 1988 सागर चन्द नैयर

शिक्षा मन्त्री हिमाचल प्रदेश

सन्देश

माननीय शिक्षा मन्त्री सागर चन्द नैयर द्वारा विमोचित पुस्तक 'दर्शन' को पढ़ कर आभास हुआ कि डॉ० नरेश वैद्य परम्परागत लीक से हट कर साहित्य के लिए कुछ नया देना चाहते हैं। यह पन्द्रह कहानियों व दो कविताओं का प्यारा सा रोचक संग्रह है। जिसकी हर कहानी सन्देश देती है 'देश भक्ति और देश प्रेम का'।

मेरी माँ :— कहानी में मातृ भूमि के प्रति अनुराग भाव के साथ साथ कटाक्ष है, उस वर्ग पर जो पढ़ लिख कर, योग्य बन कर विदेश जाना अपनी शान समझते हैं।

मण्डी का सन्त :— सन्त वही है जो शान्त है। शान्त वही है जिसने बहुत सारा विस्तार नहीं डाला है।

पहाड़ी टोपी, वीर भद्र सिंह जी और मैं :— इसमें पहाड़ियों की सरलता और उपेक्षा की कसक है। मैदानी इलाके वाले किस प्रकार से 'पहाड़ियों' को लूटते हैं। वीर भद्र जी का प्रसंग देकर यह सिद्ध किया है कि अब शीघ्र ही पहाड़ी भी दुनियां की दौड़ के साथ दौड़ सकेंगे तथा उनकी कहीं भी अवमानता नहीं होगी।

अपंग :— अपंग में दुर्घटना का तांडव नृत्य और अपंग की दर्द की कसक के साथ ही सिद्ध किया है कि पैसा इन्सान का जीवन नहीं बन सकता, साधन अवश्य है।

सावधान : कृष्ण पैदा हो चुका है :— नवीन शैली में है जो पुरानी लीक से परे हट कर लिखी गई है ।

दर्शन :- कहानी गद्दी जनजीवन को दर्शाती है । पुस्तक के शीर्षक को स्पष्ट करती हुई सामाजिक व धार्मिक धारा प्रवाहित करती है ।

शक्ति :- के माध्यम से लेखक ने एक सशक्त मुद्दा उठाया है कि धार्मिक श्रद्धा को किस प्रकार से पैसों के लालची व्यापार बना देते हैं ।

मण्डी का अमिताभ :- उन नौजवानों के भटके कदमों को अवश्य स्थिरता प्रदान करेंगे जो हीरो बनने के लोभ में अपने कैरियर को जीरो कर लेते हैं ।

कविता भूखा बचपन :- गरीबों की वास्तविक स्थिति को उजागर करती है—ऐश्वर्य के साथ साधन है अमीरों को और दो बूंद आंसू, चन्द आहें हैं गरीबों को ।

अंत में मैं डॉ० वैद्य जी को जिन्होंने एक उत्कृष्ट कहानी संग्रह 'दर्शन' के रुप में पाठकों को दिया है, 'दर्शन' की सफलता के लिए शुभ कामनायें प्रस्तुत करता हूं ।

सरकाघाट
दिनांक 9 सितम्बर 1988

प्रताप सिंह चौहान
कोषाध्यक्ष
पत्रकार महासंघ, हिमाचल प्रदेश

रैफरल चिकित्सालय सरकाघाट, जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश में कार्यरत योग्य सरकारी दन्त चिकित्सक डॉ० नरेश वैद्य की पुस्तक 'दर्शन' में पन्द्रह लघु कहानियां और दो कवितायें हैं।

अपने जीवन काल में लेखक अनेक पात्रों के सम्पर्क में आए हैं। इस संग्रह में इन्होंने उन पात्रों को चुना है जो मुख्यतः हिमाचली हैं तथा जिन्होंने उनके मस्तिष्क पर चिरकलीन प्रभाव छोड़ा है। इन पात्रों से पाठक गण भी बहुत कुछ सीख सकते हैं तथा ज्ञान को विकसित करके जीवन को परिष्कृत करके भारत के अच्छे नागरिक बन सकते हैं।

कहानियों के पात्रों की सफलता-असफलता, दुःख-सुख, आचार-विहार, आदतों व अनुभूतियों को लेखक ने बड़ी कुशलता व कारीगरी से सरल भाषा में अभिव्यक्त किया है। पुस्तक 'दर्शन' उनकी एक उपलब्धि है।

"दर्शन" पुस्तक सचमुच ही लेखक की लेखकीय प्रतिभा का दर्शन कराती है। यह पाठकों का मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान वृद्धि भी करेगी। डॉ० नरेश वैद्य एक अनुभवी लेखक है। पिछले तीन वर्षों से लगातार स्थानीय समाचार पत्र 'शक्ति दर्शन' के लिए लेख, कहानियां और कवितायें लिखते रहे हैं तथा विभिन्न पत्रिकाओं में इनके लेख छपते रहे हैं। पाठकों के प्रोत्साहन व प्रशंसा से ही वे अपने प्राथमिक कर्त्तव्य दन्त चिकित्सा के साथ-2 लेखन क्षेत्र में भी आगे बढ़ रहे हैं। इनके लेखन के प्रति रुचि

वास्तव में प्रशंसनीय है। मैं इनके इस प्रयास की सफलता की कामना करता हूं जो कि इन्होंने इस पुस्तक को लिखने और सम्पादित करने में लगाया है।

विंग कमाण्डर
दलजीत सिंह जसवाल
प्रबन्धक
गोल्डन लॉयन
कैन्टीन सरकाघाट
(हि० प्र०)

दिनांक 9 सितम्बर 1988

मेरी माँ

मैं अमीर तो नहीं वनना चाहता हूं पर मेरा समाज जिसमें मैं रह रहा हूं कहता है कि अमीर वनो, तभी कदर है। मेरी माँ कहती है देखो वह विदेश गया हुआ है कितना पैसा हो गया है उसके पास। मेरे मुँह में न जाने कहां से कड़वाहट आ गई। मुँह में ही उस विदेश गए वाले को मोटी सी गाली निकालता और फिर सोचने लगता कि अपनी गरीव माँ को छोड़ अमीर माँ को अपना लूं। मैंने माँ से अव तक काफी ले लिया, अव इस काबिल हुआ अब देना चाहता हूं। अब देने वाला हुआ तो दूसरी माँ को अपना लूँ। ऐसा ही हो रहा है मेरी माँ ने ऐसा कह दिया कि दूसरी माँ के पास चला जा। उसने भी समाज में पैसे को पूजते हुए देखा होगा कभी ? इतनी बड़ी बात कह दो।

पैसे के लिए जो विदेश गये हैं, माँ वे गद्दार हैं। जिस मिट्टी में पले उसकी सेवा करने का मौका आया तो चले गए विदेश, वहां विदेशियों की सेवा करके वदले में क्या मिलता है कुछ चाँदी के सिक्के, जो कभी खाए नहीं जाते। खाना तो सिर्फ खाना है, और इज्जत उनकी वह समाज करता होगा, जिसकी आंखें चाँदी के सिक्कों से चकाचौंध हो जाती होंगी। मुझे इज्जत नहीं चाहिए झूठी। मैं तो अपने लोगों की सेवा करुंगा। इस धरती का कर्ज चुकाऊंगा जिसने मुझे इतना बड़ा किया। समाज में ही कुछ बुराई आ गई होगी। तभी तो बिक रहे हैं देश के राज कुछ सिक्कों के वदले। पैसा-पैसा-पैसा, साधन ही साध्य हो गया। देश के गद्दारों में वह विदेश जाने वाला और राज बेचने वाला दोनों है। दोनों पैसों के लिए अपनी माँ से गद्दारी कर गये।

मैं अमीर तो नहीं बनना चाहता था पर वह अपनी कार बताकर मुझसे क्या कहना चाहता है, मैं जानता हूं यही न कि इतना पढ़कर भी मैं उससे नालायक रह गया जो पैदल चल रहा हूं। मुझे मालूम है वह स्कूल नहीं पढ़ा पर अपने देश को लूटने लग गया। सब सेलटैक्स, इनकम टैक्स की चोरी है। कितना इनकम टैक्स देते हो? बिल्कुल नहीं, पर मैं देता हूं। मैं तुम से अमीर हूं, अपनी माँ की नज़र में। तू तो चोर है चोर! पर कार की चमक से तूने लोगों की आंखें बन्द कर दी हैं। समाज चोर को इज्जत दे रहा है।

मैं अमीर तो नहीं बनना चाहता पर अभी वह एक डिपार्टमैन्ट में क्लर्क था। नौकरी छोड़ी, लड़ गया इलैक्शन जीत गया और फिर अपनी पार्टी छोड़कर दूसरी पार्टी में चला गया, जैसे लोग विदेश जाते हैं पैसों के लिये। पैसे ही नहीं लोगों की सेवा का ज्यादा मौका भी मिल गया। झण्डी भी मिल गई और विभाग, वह भी उद्योग जिसमें मजदूर भी होते हैं और उद्योगपति भी। उसने उद्योग-पतियों को चुना और देखते ही देखते एक बहुत बड़ा मकान बना लिया, एक गाड़ी ले ली। पर किसी ने नहीं पूछा कि पैसा कहां से आया? एक विधायक को क्लर्क से ज्यादा तनख्वाह नहीं मिलती होगी। एक मन्त्री को भी मेरे से आधी तनख्वाह देती है मेरी माँ। परन्तु वह माँ का ही सौदा करने लग जाए तो एक गन्दी सी गाली निकलती है, कौन मादर कहता है कि राजनीति बुरी है। नेता माँ का सौदा करे तो गन्दी होगी ही।

लोकसेवक लोगों का शोषण कर रहे हैं। यह कैसी सेवा है? सिर्फ पतियों की, कभी लखपतियों को तो कभी उद्योगपतियों की।

मैं अमीर तो नहीं बनना चाहता पर यह टक्के का आदमी न

लिखा न पढ़ा न बात करने की तमीज़ । कहता है नौकरी करनी है कि नहीं या देखना है लौहल-स्पि त । बेटा, मैं तुझे ऐसी जगह मारुंगा जहाँ पानी नहीं मिलेगा । मैंने कुछ भी नहीं किया सिर्फ उससे पहले जो गरीब आया था उसे देखने लग गया । उसे समाज इज्ज़त देता है । वह जहां जाता है उसे नमस्कार किया जाता है । वह तो मैं भी जानता था इसलिए मैंने भी उसे नमस्ते कर दी थी और बैठने के लिए बोल दिया था । मैं देख रहा हूं वह बैठे-2 भी हांफ रहा है गुस्से में ।

मैं जानता हूं कि मन ही मन वह क्या सोच रहा है । बेटा । तू तो क्या तेरा अफसर भी इन पांवों को छु चुका है । ऐसी-तैसी अफसर की मेरी नजर में तो तू मन्त्री का चमचा नहीं अपनी माँ का दलाल है उसकी तरह हो । दोनों दलाली का पैसा खा रहे हैं और मेरी माँ को नोच रहे हैं । मैं अमीर तो नहीं बनना चाहता पर जब देखता हूं कि मेरा ही भाई बिना इलाज के मर रहा है । कल ही वह आया, पेट में दर्द थी । डॉक्टर ने कहा बड़े हस्पताल जाना पड़ेगा । आप्रेशन होगा, यहां खून का इन्तजाम नहीं है । जाने को गाड़ी चाहिए गाड़ी के लिए पैसे जो उसके पास नहीं थे । भेजा बड़े हस्पताल और पहुंच गया वापिस घर ही । फिर जहां से आया था वहीं चला गया ।

मैं अमीर तो नहीं बनना चाहता पर जब सुनता हूं कि मेरी बहिन ने कुछ दिन पहले आत्म हत्या कर ली । उसने एम. ए. कर लिया था । नौकरी नहीं मिलती थी । सुना टुरिज़्म का अफसर अच्छा है और उसके पास नौकरी भी है । चली गई आखिर पेट भरने को कुछ भी तो नहीं रहा था । कुछ दिन तो पेट भरा फिर दूसरा ही पेट भर दिया अफसर ने । पंखे से लटक

गई । उसको क्या पता था कि भरे पेट वालों को और भी भूख होती है ।

मैं अमीर तो नहीं बनना चाहता हूं पर इतना चाहता हूं कि मेरी सोने की चिड़िया मेरी माँ को हम सब लोग झूठ अमीर बनने के चक्कर में लूटें खसटें नहीं । दो वक्त की रोटी, तन ढकने को कपड़ा और नींद तो आ ही जाती है उसकी गोद में । इतना भर ही लेकर बाकि अपना खून पसीना वहा देना चाहिये जो इतना कुछ हमें देती है उसके लिए ।

मेरी माँ, हमारी माँ सोने की है यही क्या कम है । बेचकर अमीर नहीं बनते गरीब बनते हैं । अब इसका सौदा करना छोड़ो, नहीं तो यह हाथ भी उठ जाएगा अमीर बनने के लिए फिर माँ ही तुम्हारी रक्षा करे ।

मण्डी का सन्त

सन्त को भगवां कपड़ों में ढूंढते रहो तो शायद उम्र बीत जाए और हो सकता है, सन्त मिले ही नही । आजकल कपड़े बहुत ज्यादा धोखा दे जाते हैं । कोई भी गुण्डा खादी के सफेद कुर्ते पाजामें में घूमता मिल जाएगा । मैं मण्डी के एक खादी धारी सिर्फ नाम के नेता को जानता हूं । नेता जी ने आजतक कोई नेताओं जैसा काम नहीं किया पर लगता ऐसा है जैसे न जाने कितने इलैक्शन जीते और कितने हारे होंगे । अक्सर ऐसा ही होता कि असली व्यक्तित्व को नकली परिधान से ढके जाने की कोशिश की जाती है। वैसे व्यक्तित्व को कपड़ों की जरुरत ही कहां पड़ती है । मेरा सन्त के लिवास पर कभी भी ध्यान नहीं जाता अगर उनकी घरवाली हर बार उन्हें बाहर जाते हुए यह कहते हुए नहीं टोकती क्या फटी पैन्ट पहन रखी है—यह टोपी बदल लो, बूट तो आपके बिल्कुल फट गए हैं और वे हमेशा इसकी परवाह किए वगैर मेरे साथ चल पड़ते ।

मुझे आज तक याद नहीं कि उसके साथ काटा हुआ कोई भी क्षण बोझिल हुआ हो । इनकी बातों का मुझे इतना आनन्द आता है कि परमानन्द के दर्शन हो जाते हैं। इनके सोने का कमरा, बैठक का कमरा, किचन और इनका सारा सामान सिकुड़ कर इनके ही जादू द्वारा एक छोटे से टाहड़े में समा कर रह गया है। गर्मी लगी तो एक चेन के खिचते ही आसमान नजर आने लगता है क्योंकि छत की टीन को खिसकाने की यही बिधि बना रखी है इन्होंने । छत की हर स्लेट के नीचे इन्होंने अपना हर जरूरी सामान रखा है। वे फकर से कहते हैं मेरे यहां तो चिड़िया का दूध भी मिल जायेगा। स्टोव जला नहीं और आपको अपना मनपसन्द खाना हाजिर। मैंने बड़ी-बड़ी छतों के नीचे बैठकर भी ऐसी

मेहमानवाजी नहीं देखी जितनी इस छोटी सी छत के नीचे देखी है। हुक्के का दौर जब चलता है तो लगता है किसी नवाब के के घर में बैठे हों। मैंने हमेशा इन्हें अधलेटे से मस्ती में हुक्के का रसास्वादन करते देखा है। कोई आए तो उनको जगह बनाने के लिए वे पूरे बैठ जाएंगे क्योंकि यहां न खड़े होने की जगह है न ही किसी के आने पर लेटे रहने की। फिर भी वहां मैंने पांच छः आदमियों को इकट्ठे बैठे देखा है जिस पर मुश्किल से मंडी के सन्त रात को सोते हैं। यह एक बस की सीट ही तो है जो रात को इनका बिस्तर बन जाता है और दिन को सोफासैट।

बहुत साल पहले जब मेरा इससे परिचय हुआ तो ये तकनीकी प्रशिक्षण केन्द्र में कार्यरत थे। इन्हें सिर्फ 80 रुपये वेतन मिलता था। इसी में सन्तुष्ट न जाने वे कैसे अपनी घर-गृहस्थी को चलाते थे। यह आज तक मेरे लिए पहेली ही रही। इन्होंने अपनी हर औलाद को अच्छी से अच्छी तालीम देने की कोशिश की। आहिस्ता-2 फिर इनका वेतन भी बढ़ गया था, मगर एक साथ तीन बच्चों को कालेज की पढ़ाई का बोझ भी कुछ कम नहीं था।

जब मण्डी में मैंने अपनी निजी प्रैक्टिस शुरु की तो इनका बीच वाला लड़का मेरे साथ काम करने लगा। फिर तो मेरा इनके घर आना जाना बहुत बढ़ गया। ये अपने छोटे लड़के को इन्जीनियर बनाना चाहते थे। उस वक्त वह प्री० युनिवर्सिटी में पढ़ता था। एक दिन कहने लगे क्यों नहीं इसे ट्यूशन ही लगा देते हैं। मैं सोचता ही रहता था कि ऐसा कैसे होगा और वे कर गुजरते थे।

वक्त गुजरता गया वे रिटायर हो गए। मुझे लगा अब वे अपना गुजारा कैसे करेंगे क्योंकि अभी तक उन पर काफी बोझ था। परन्तु बोझ ऐसा लगता था जैसे इनको इस बोझ का अभास ही न हो। वैसे ही हंसते, वैसे ही हर आने वाले का स्वागत करते और वैसा ही हुक्के और चाय का दौर चलता। उन दिनों जब मैं वहां

जाता तो इनके दिल का दर्द ढूंढने का असफल प्रयत्न करता पर कहां होता है इन्हें दर्द मुझे आजतक पता नहीं चला। फिर इन्हें दो साल की एक्सटेन्शन मिल गई और मैं भी सरकारी नौकरी में लग गया।

फिर जब मैं इन्हें मिला तो ये रिटायर हो चुके थे। पर इन्होंने पार्टियों में खाना बनाना शुरु कर दिया था जिसके बदले में इन्हें कुछ पैसे बन जाते थे। मेरे पूछने पर कि आजकल कैसे गुजारा चलता है कहने लगे डाक्टर साहब अगर मुझे पहले पता होता कि इसमें इतनी कमाई है तो मैं पहले ही यह नौकरी छोड़ देता। हिसाब-किताब से पता चला कि आजतक इनकी आर्थिक स्थिति पहले से कहीं अच्छी है। परमानन्द ही परमानन्द के लिए, वासुदेव ही वासुदेव के लिए कुछ करिश्मा कर रहा है। नौकरी छूट्टी तो खाना बनाने की कला दे दी। कुछ लोग रिटायर होने के बाद अधूरे हो जाते हैं और ये दोहरे हो गए। शरीर जब से देखा है, वैसा ही है कोई फर्क नहीं। इनकी घरवाली इन्हें समस्याओं में घेरने की काफी कोशिश करती मगर ये हमेशा इससे बच कर निकल आते। इनकी लड़की बड़ी हुई तो घरवाली को उस की चिन्ता सताने लगी। मगर मैंने इन्हें कभी ऐसी फिजूल चिन्ता में पड़ते नहीं देखा। कहते थे भगवान सब कुछ कर देगा। वैसा ही हुआ। वासुदेव ने अपना करिश्मा बता दिया। बड़ी धूमधाम से शादी करके लड़की को घर से विदा किया और सब देखते रह गए कि ऐसा सब कुछ कैसे हो गया। वासुदेव की अपनी लीला है। मैं तो सिर्फ इनकी लीला देखकर ही खुश रहता हूं।

सन्त वही है जो शान्त है। शान्त वही है, जिसने बहुत सारा विस्तार नहीं डाला है। जिसने अपनी जरुरतें बहुत कम कर दी है। अपने लड़कों की फटी पैन्ट से गुजारा चल पड़ता है जिसका तो फिर भगवाँ कपड़े की जरुरत कहां रह गई। जो किसी ने ठुकराया उसको अपना लिया इससे ऊपर महानता और क्या?

लोगों की सेवा में ही जिन्दगी गुजार दी हो जिसने, उससे ऊ सन्यास क्या ? सन्त ने कुछ पकड़ा ही नहीं, जो छोड़ना है । टाहड़े में रहने वाले सन्त की कर्मभूमि पूरी मण्डी है । मुझे तो मण्डी का हर घर उनका अपना लगता है । हर घर में उन्होंने लोगों को खाना खिलाया होगा । हर घर को अपनी प्यार भरी बातों से, अपनी खुशियों से भरा होगा । जब भी जिस घर में जरूरत पड़ी तो इनकी सेवाएं हमेशा हर आदमी को प्राप्त हुई होंगी ।

जब भी मिलता हूं तो मुझे लगता है, सन्त के यहां ठहराव है । कहीं भागे जा रहे हैं लोग ? बड़े-बड़े मकान गाड़ियां कहां ले जा रही हैं लोगों को ? मुझे तो भगवान टाहड़े का ही रास्ता बतायें जहां सब कुछ सिमट कर रह जाता है । जहां से दुनियां को मिल ही रहा है, वापिस कुछ जाने को जगह ही नहीं । वापिस जाने को जितनी बड़ी जगह कर दी जाए दुनियां उतनी ही खाली हो जाएगी । भगवान मुझे टहाड़े की तरह भरा कर दे, बहुत बड़े किले की तरह खाली नहीं । भरा बर्तन ही कुछ दे सकता है । खाली तो हमेशा भरने के इन्तजार में रहता है और छोटी सी जिन्दगी में इन्तजार के लिए वक्त कहां ?

'कैदी,

चारों तरफ नर्सों की भीड़ थी और वह था कि चिल्लाए जा रहा था। वार्ड के बाहर बरामदे में सीढ़ियों के पास लगा उसका बिस्तर पच्चास बिस्तरों वाले इस अस्पताल में एक्स्ट्रा बैड था, जिस पर दत्ता हमेशा कब्जा जमाए रखता था। वह पच्चास बिस्तरों से इस बिस्तरे को ज्यादा सुरक्षित समझता था क्योंकि उससे ज्यादा बिमार पच्चास मरीजों का मतलब उसकी छुट्टी। अस्पताल से छुट्टी का मतलब एक गरीब शुगर के मरीज के लिए क्या हो सकता हैं, दत्त जानता था तभी तो एक कोने में पड़ा कभी अपने अधिकारों की बात नहीं करता था। हालांकि वह रोज हस्पताल में किसी न किसी को अपने अधिकारों के लिए लड़ते देखता था। कहीं लाईट नहीं .... कहीं डाक्टर देखने नहीं आया.....कहीं सिस्टर ने वक्त पर इन्जेक्शन नहीं लगाया..... कहीं गन्दगी साफ नहीं हुई .....यह सब शिकायत दत्ता की आज तक नहीं हुई। उसे तो बस यही डर हमेशा रहता को कहीं डाक्टर ने छुट्टी कर दी तो कहां जाएगा वह अपनी बिमारी लेकर। असली निमार को कभी भी ऐसी शिकायतें नहीं होती और वह तो पूरी तरह डाक्टर पर आश्रित होता है।

मझला कद, हड्डियां निकला हुआ गोरा शरीर, सूजे हुए मुंह के होठों के दोनों किनारे जख्मी और उसके अन्दर मैले दांत। यह सब मिलाकर ही तो दत्ता का ज़द शरीर बना था जो बचपन से ही शुगर का मरीज बन गया था। बीस साल के इस शरीर के सात साल इसी हस्पताल में गुजर गए थे। पर सात साल का कब्जा भी दत्ता को यहां स्थायी न कर सका था।

बिस्तर के पास लगी डोली में ही उसने अपना सारा सामान संजोया होता था। सम्पति के नाम पर उसके पास एक छोटा ट्रांजिस्टर,

एक बिस्तर एक स्टोव, एक हाथ में डालने वाला घड़ी दो खाकी रंग के कुरते पाजामें और एक कोट के सिवाये कुछ नहीं था। इस पूंजी को जोड़ने के लिए भी उसे सालों लग गये थे और उसको हर चीज के पीछे एक इतिहास था। जब कबाड़ियों से खरीदे गए कोट से उसका जिस्म ढका था तो महीनों उसके चेहरे से रौनक और शर्मीदगी नहीं गई थी। नए कोट के आगे फटा जिस्म शरमा गया था। ट्रांजिस्टर तो उसके जीवन में बहार ले आया था। घण्टों गाने सुनने के बाद जब सैल खत्म होने लगते थे तो दत्त का दिल बैठने लगता। पर सबसे ज्यादा दिल बैठता था उसका हस्पताल में इनसुलिन खत्म होने पर। जब कभी मैंने उसे इजैंक्शन लाकर दिया तो उसकी आंखों में ऐसी चमक आ जाती थी जैसे मैं उसे हीरे जवाहरात दे रहा हूं। आज की कमीं कल न आए इस डर से वह इन्जेक्शनों पर टूट पड़ता। अगर हमें भी भगवान ने इनसुलिन न दी होती तो हम भी हीरों के बदले इन्जैक्शनों पर ही टूटते। दे दी है तभी तो भटके है हीरे जवाहरातों के चक्कर में। तभी तो करोड़ों रुपऐ के जिस्म को टी. वी. स्कूटर के लालच में जलाया जा रहा है। पर दत्त इनसुलिन की कीमत जानता था।

दत्त को देखकर मुझे लगता था कि वह भी तो कैदी है। खुली सड़क जाती है यहां से उसके गांव तक फिर भी कहीं भी नहीं जा सकता। हाथ में चढ़ा ग्लुकोज मझे हथकड़ियों से भी भयानक लगता है। पर किस जुल्म की सजा मिल रही है दत्त को, वह तो गुनाह करने के काबिल ही नहीं था जब से उसे कैद हो गई। मुझे लगता है रोगी सबसे बड़े कैदी है। जुकाम से लेकर कैंसर तक के कैदी। जितने बड़े कैदी उतने बड़े हस्पताल में। छोटे से छोटा कैदी भी उमर कैदी से ज्यादा कष्ट सह रहा होता है। गरमी में पंखा लिया जा सकता है पर बुखार में तो कम्बल का ही सहारा लेना पड़ता है। कष्ट में कितना फर्क है।

आज दत्त जोर-2 से चिल्ला रहा था। सिस्टरज उसे पैसे दे रही थी, मण्डी जाने के लिए। डाक्टर के पास उसकी बढ़ती तकलीफ के लिए ईलाज नहीं रहा था और हमेशा ऐसे मौके पर बड़े हस्पताल का नाम एक सांत्वना लेकर आता है। मण्डी जाने की रट से लगता था, उसे भरोसा हो कि मण्डी के डाक्टर उसे जरुर ठीक कर देगे और भरोसा ही आदमी का आधा ईलाज कर देता है। यह सोचकर ही मैंने कहा था दत्त, मण्डी वता आओ, फिर वापिस यहां आ जाना। पर वह चुप रहा। मुझे लग रहा था वह वापिस नहीं आएगा। वह रो-2 कर हर आदमी से मिलता रहा। मैं उसे रोते ही छोड़ चला आया। सचमुच आज दत्त को बहुत ज्यादा तकलीफ थी।

फिर दत्त कभी वापिस इस अस्पताल में नहीं आया। एक दिन उसके मरने की खवर आई थी। आखिर उसकी लम्बी सात साल की कैद खत्म हुई।

दत्त ने इस जन्म में तो कोई गुनाह नहीं किया जो इतनी लम्बी सजा मिली उसे। सुना है भगवान न्याय करता है। इस जन्म में फिर क्यों पाप फलता फूलता नजर आता है? कहीं यह जन्म जन्मों की बात तो नहीं। कहीं दत्त पिछले जन्म की सजा भुगत कर ही तो नहीं गया। दत्त हमसे कह गया हैं कि गरीव वह है जिसके पास इनसुलिन नहीं। पैसे की अमीरी कोई अमीरी नहीं होती। पैसों के साथ खाना जरुर खरीदा जा सकता है पर भुख नहीं। भगवान की दी हुई एक एक चीज चिल्ला 2 कर कह रही है कि तुम गरीव नहीं हो। किसी करोड़पति कैंसर के मरीज से ज्यादा अमीर हो। किसी भी दिल के मरीज राष्ट्रपति का करोड़ों रुपए खर्च करने के बाद भी तुम्हारी तरह दिल नहीं हो सकता न ही किसी मुख्यमंत्री का गुरदा। दिल और गुरदे की रिपेयर के लिए हो लाखों करोड़ो रुपए लग जाते हैं फिर भी भगवान द्वारा दिए गए दिल और गुरदे का क्या मुकावला।

जब तुम इतने अमीर हो तो फिर क्यों अपनी मां का सौदा कर रहे हो पैसों के लिए। कहीं तुम भी दत्त की तरह भगवान के कैदी तो नहीं बनना चाहते क्योंकि तुम्हारे लिए इन्सान द्वारा बनाई गई कोई भी कैद काफी नहीं।

डा० सौजु राम

आप इनसे मिलिए ये हैं डा० सौजु राम। इनकी उमर सौ साल से ऊपर है फिर भी बुढ़ापा इनसे कोसों दूर है। सर्दी हो या बरसात ये ऐसे ही लोगों की सेवा करते रहते हैं। ये शिमला में ही पैदा हुए। शिमला में ही बड़े हुए, इन्होंने आज तक किसी स्कूल कालिज का मुंह नहीं देखा। शिमला में रहते हुए भी कभी स्नोडन, रिपन हस्पताल का तो छोड़ो आइसोलेशन हस्पताल तक नहीं गए जहां से करीब ये बीस गज दूर रहते हैं। इसी स्थान में मेरा इनसे पहला परिचय हुआ था और आज भी मुझे इसी स्थान पर मिलते हैं। जम कर प्रैक्टिस करते हैं पर मजाल है किसी ने इन्हें बिना डिग्री प्रैक्टिस करते हुए पकड़ा हो। कभी माल रोड़ नहीं गए। कभी कोई पिक्चर नहीं देखी कभी बालजीज में बैठकर चाय नहीं पी। कभी अपने विधायकों को देखने विधान सभा नहीं गए। कमाल है कि डा० सौजु राम जी कभी भी किसी से परिचय बढ़ाने की कोशिश नहीं करते। सौ साल हो गए रहते शिमला में पर कभी भी अपने स्थान से जाने की चेष्टा नहीं की। हमेशा प्रसन्नचित हवा पानी पीकर गुजारा करते देखा। वे किसी भी बड़े डाक्टर से बड़े हैं। आज तक मैंने उनमें कोई कमी नहीं देखी। हर आदमी को एक नजर से देखने वाले डा० सौजु राम हमेशा झुके हैं सेवा के लिए। हर आदमी से बड़े प्यार से मिलते हैं।

वैसे मैंने देखा है जितना बड़ा डाक्टर उतनी उन तक पहुंच मुश्किल। अभी हाल में ही ऐसा ही एक दिल्ली स्थित हिमाचल के डाक्टर से मिलने गया। उनका मिलना मुश्किल बात सही पर सौजु राम के आगे तो मुझे वे बहुत फीके लगे। सौजु राम में अपनत्व है वहां तो कुछ भी अपना न लगा। एक अजनबी की

की तरह मिलकर जुदा हो गया उनसे, भगवान से यह प्रार्थना कर कि कभी दुबारा उन से मिलने की जरुरत न पड़े। पत्थरों की बड़ी इमारतों में बैठकर दरवाजों में बन्द होकर वे भी मुझे पत्थर से ज्यादा कुछ नहीं लगे। उन दिनों डाक्टरों की दिल्ली में हड़ताल चली थी। हर आदमी वेतन बढ़ोतरी चाहता हैं। लगता है कोई खुश नहीं। जब पैसा ही मापदण्ड हो तो ऐसा ही होता है। यहां गधे को ज्यादा वेतन दे दिया है तो घोड़े बन गये हैं और घोड़े वेतन की कमी के कारण गधे। वैसे तो डाक्टर अनमोल चीज में डील करते हैं और वह है जिन्दगी। जिन्दगी के आगे पैसा कैसा। कोई चोधरी बन कर डाक्टर को नीचा नहीं दिखा सकता मगर फिर भी आजकल के चौधरी अपना वेतन बढ़ा कर ही डाक्टरों से उपर बैठ गये हैं। यहां तक कि स्वास्थ्य विभाग का सबसे बड़ा पद भी चौधरियों के हाथ में ही है। फिर हो रही हैं हड़तालें। मर रहे हैं आदमी बिना ईलाज के। अनमोल चीज में डील करने वालों का वेतन भी अनमोल होना चाहिए। आदर-इज्जत-सम्मान जो आजकल सिर्फ पैसों वालों को ही मिलता नजर आता है तभी तो डाक्टरों ने भी बिकना शुरु कर दिया है। भगवान न करे कहीं हिमाचल के देवता डाक्टर भी कहीं इस चपेट में न आ जायें। अनमोल रहने के लिए सिक्कों के आगे बिकना नहीं पड़ता। जो डाक्टर बिक जाता है और बिकने लग जाता है वह राक्षस बन जाता है। मैंने ऐसे ही राक्षस डाक्टर के भेस में देखे हैं। तभी तो पहले वाले डाक्टर तो जिस घर में इलाज करने जाते थे वहां का पानी तक नहीं पीते थे ताकि कहीं वे भी राक्षस न बन पाए।

पर सौजु राम न पैसों के चक्कर में है न इज्जत सम्मान के। तभी तो आजतक कोई हड़ताल नहीं की। न ही बड़ा बनने के लिए अपने आप को बड़े-बड़े दरवाजों में बन्द कर लिया। हर आदमी के लिए हमेशा दरवाजे खुले। यहां दरवाजे ही कहां वह तो खुली आसमान के नीचे हर आदमी के दांतों की मुफ्त सफाई

करता है। मुझे तो दांतों को साफ करने के लिए औजारों की जरुरत पड़ती है पर उसे तो औजारों की भी जरुरत नहीं। मेरे को दिमाग के एक छोटे से हिस्से में डैण्टिस्ट्री छुपी है उसका तो रोम-रोम डैण्टिस्ट्री से भरा पड़ा है। जो मेरे दिमाग में डाला गया है वह उसके रोम-2 में भरा पड़ा है। यकीन मानिए सौजु राम अपने अंगों को देकर लोगों के दांत साफ करता है। दांतों को साफ करने के लिए कोई हाथ से कोई चाकु से कोई दराती से से उनके अंगों को काटना है और वह है कि सारी तकलीफ सहने के बाद भी उफ नहीं करता। कोई उसके अंग को बेरहमी से पकड़ के तोड़ता है और उसकी चमड़ी को भी उधेड़ देता है। फिर भी वह जानता है उसका काम दांत साफ करना है इसलिए धर्म को निभाते हुए अपने जिस्म का हर अंग देने के लिए तैयार रहता है। यह है भगवान द्वारा बनाया हुआ दन्त चिकित्सक डा० सौजु राम। जो नाम के पीछे कभी नहीं भागा। नब्बे साल तक कोई नाम ही नहीं रखा। मेरे जैसे छोटे दन्त चिकित्सक ने उसका नाम संस्करण भी कर दिया ताकि वह भी झूठे नाम के चक्कर में पड़ जाए। छोटा आदमी कर ही क्या सकता है सिर्फ चक्करों में डालने के सिवा।

हां अब आप समझ गए होंगे कि डा० सौजु राम एक दातुन का पेड़ है जिससे मेरा परिचय करीब ग्यारा साल पहले हुआ था तभी तो डाक्टर सौजु राम जन्म से ही दन्त चिकित्सक हैं। दांतों के लिए पैदा हुआ दांतों के लिए जी रहा है और दांतों के लिए मर जाएगा। अपने धर्म केलिए सौजु राम की तरह अपनी जान तक देने के लिए तैयार रहना चाहिए हमें। काश सब डाक्टर सौजु राम के पद चिन्हों पर चलने लग जाए। समाज की सेवा करते हुए बदले में समाज से कुछ न मांगे। सिर्फ समाज की सेवा करते हुए अपना धर्म निभाते रहें। अपना धर्म बदल कर व्यापारी न बनें पैसों के पिछे

न भागें। डाक्टर की पहचान उसके बंगले गाड़ी और पैसों से नहीं होती। उसकी पहचान तो उसके कर्म से उसकी सेवा से उसके ज्ञान से होती है। भगवान करे मेरे रोम-रोम में भी सौजू राम की तरह डैण्टिस्ट्री भर जाए। इसी प्रार्थना के साथ सौजू राम के चरणों में मेरा बारम्बार नमस्कार।

पहाड़ी टोपी, वीर भद्र जी और मैं !

पहाड़ी टोपी से मेरा जन्म से ही नाता है। क्योंकि मैं पैदा ही पहाड़ में हुआ, पहाड़ में पला, बड़ा हुआ और अब पहाड़ की सेवा करके पहाड़ में ही मिल जाऊंगा। पहाड़ी टोपी सीधे-सादे पहाड़ियों का सर का ताज है। मगर लोग हमारे भोलेपन का किस तरह मजाक करते हैं यह तो कभी पहाड़ी टोपी पहन कर कहीं बाहर जाकर ही पता चलेगा।

मैं तो पहाड़ी टोपी नही पहनता और न जाने मेरे जैसे कितने पहाड़ी लोग पहाड़ी टोपी नहीं पहनते। हमारे पहाड़ी टोपी न पहनने के अलग-2 कारण हो सकते हैं। कुछ तो अपनी संस्कृति को भूल रहे हैं, कुछ अपने गंजे होने का इन्तजार कर रहे होंगे और कुछ लोगों को अभी भी अपनी अधपक्की जुल्फों से कुछ उम्मीद होगी, वहुत से लोगों को शायद मेरी तरह पहाड़ी टोपी के साथ प्रताड़ित होना पड़ा होगा, इसीलिए पहाड़ी टोपी नहीं पहनते। पहाड़ी टोपी के साथ वह हरिद्वार का सफर मैं आज भी नहीं भूलता।

मैं हरिद्वार से वापिस अपने दोस्त और उनकी बीबी के साथ सरकाघाट आ रहा था। हम बहुत जल्दी ही बस स्टैण्ड पहुंच गए। एक बस चण्डीगढ़ तक जा रही थी इसलिए सोचा यहां इन्तजार करने से बेहतर है कि चण्डीगढ़ ही चलते हैं। वहां घमना भी हो जाएगा और यही गलती हमें ले डूबी। मन भी कितना अशांत होता है कि अशान्त जगह घूमने की सोच ही ली। अम्वाला पहुंचकर हमको हुक्म हो गया—"हुण तुसीं दूजी बस फड़ लओ, साड्डी वस खराव हो गई।" हम उतरे और दूसरी बस जो चलने को ही थी के कण्डक्टर से पूछ बैठे, क्या यह बस चण्डीगढ़ जायेगी ? एक लम्बी सी गाली पहाड़ियों को देने के बाद

INSTITUT OF ADVANCED

कण्डक्टर ने हमें बस में बैठने दिया। मैं हैरान था कि उसे कैसे पता चला कि हम पहाड़ी हैं। वह कण्डक्टर अभी भी हमें कोस रहा था। आंखें फूट गई हैं क्या? चण्डीगढ़ नहीं तो क्या ये लाहौर जायेगी! मेरा खून खौल रहा था, पर मैं चुप था क्योंकि उससे मैं मुंह नहीं लगाना चाहता था। चुपचाप गालियां सुनकर भी अनसुना सा कर गया, पर मुझे हैरानी थी कि इसे कैसे पता चला कि हम पहाड़िये हैं। तभी मेरी नजर दोस्त के सिर पर विराजमान पहाड़ी टोपी पर पड़ी और सारा रहस्य सुलझ गया। यहां तो सस्ते में छूट गये। पर पहाड़ी टोपी ने जो गुल चण्डीगढ़ में खिलाये उनसे तो मैं और भी हतोत्साहित हो गया। कई बार सोचा कि दोस्त से कह दूं कि पहाड़ी टोपी उतार दो। पर मैंने नहीं कहा क्योंकि मुझे पहाड़ी होने पर गर्व तो था, परन्तु इस आई अचानक बला से टलना चाहता था। रात का खाना हम तीन आदमीयों का 70/- रुपये में वह भी बेकार। यह सब पहाड़ी टोपी का कमाल था। अशान्त क्षेत्र के सारे लोग मुझे अशांत लगे। हमें तो इस कदर लूटना चाह रहे थे मानों उनको ऐसा स्वर्ण मौका फिर कभी नहीं मिलेगा। उनके द्वारा दिया हुआ सामान मैं रेट काँटरेक्ट में आये हुए सामान की तरह ही स्वीकार कर रहा था। क्योंकि मुझे पता था कि स्वीकार न करना झगड़े को मोल लेना है। मैं शाँत उनकी तरह अशाँत नहीं होना चाहता था।

रात हो गई, किसी होटल में जाने कि हिम्मत नहीं हो रही थी। मैं पहाड़ी टोपी से बिल्कुल डर गया। रात की बसें बन्द थीं, नही तो रात को ही घर वापिस भाग जाता। मजबूरी थी और रात तो काटनी ही थी। मैंने अन्तिम निर्णय ले लिया बस स्टैण्ड पर सोने का और सुबह की पहली बस में यहां से निकलने का। वहां बस स्टैण्ड में पुलिस के हाथों में बन्दुकें, स्टेनगनें देख कर मेरा दोस्त मुझे किसी होटल में ठहरने के लिए विवश कर रहा था। मुझे मालूम है उनकी आंखों के आगे "पंजाब

केसरी" में छपी उग्रवादियों के शिकारों की फोटो नाच रही थी। पर मैं नही माना क्योंकि लोगों के हाथों और प्रताड़ित नहीं होना चाहता था। जिस तरह शिमला के व्यापारी लोग सीधे-साधे बगीचे के मालिकों को सीजन के बाद लूटते हैं उसी तरह आज हमको लूटा जा रहा था और पहाड़ी टोपी के आगे इसे बहुत छोटी सी कुर्बानी समझा रहा था। इन्सान भी क्या है मौत के साये के नीचे भी एक दूसरे को लूटने से बाज नहीं आता।

जब भी मैं राजा वीर भद्र जी के सर पर वही पहाड़ी टोपी देखता हूं तो मेरा सर गर्व से उठ जाता है और उस दिन की उठाई प्रताड़ना भूलने लगता हूं। टोपी एक, पर आदमी दो। क्या मैं श्री वीरभद्र जी के साथ होता तो भी मुझसे ऐसा ही व्यवहार होता? तब लगता है बड़ा आदमी ही हमारी संस्कृति को जिन्दा रख सकता है और वही उसको इज्जत दिला सकता है। मुझे बड़ी खुशी होती है जब मैं राजा साहिब को पहाड़ी टोपी में में देखता हूं। वे राजा थे और आज हिमाचल के मुख्यमन्त्री बने हैं। जब वे शान से पहाड़ी टोपी पहनते हैं, तो लगता है कि हिमाचल का ताज पहना है। जिस टोपी ने मुझे एक दिन बहुत सताया था, वही टोपी गर्व की बात बन जाती है। मेरा दोस्त मेरे साथ ही हस्पताल में काम करता है। जब भी मिलता है उसकी पहाड़ी टोपी देखकर मुझे चण्डीगढ़ की बातें याद आ जातीं हैं और वे यादें मेरे मुंह में कड़वाहट भर देती है। फिर उसी टोपी का ध्यान मैं वीरभद्र जी के सिर पर करता हूं तो मुझे लगता है कि मैं बहुत बड़ा आदमी बन गया। मैं पहाड़ी हूं, पहाड़ में मेरा ही मुख्यमन्त्री है और वह भी पहाड़ी टोपी पहनता है। फिर मैं ख्यालों में ही उन लोगों से लड़ने लग जाता हूं, जिन्होंने मुझे कभी जलील किया था। मुझे लगता है अब मुझ पर मुख्यमन्त्री का हाथ है लोग फिर उसी टोपी को सलाम करके मुझ से माफी मांगकर निकल जाते हैं। कितनी शान्ति मिलती है मुझे इस ख्वाब से यह शब्दों में आने वाली बात नहीं।

पहाड़ी टोपी को वीरभद्र जी ने अपने सिर पर बिठाकर इसे सम्मान दिया है जिसके लिए पहाड़ के लोग इस पहाड़ के सपूत को कभी नहीं भूलेंगे। न जाने कितने लोगों को पहाड़ी टोपी पहनकर आजतक शर्मिन्दगी सहनी पड़ी होगी। न जाने मेरे जैसे कितने लोगों को सरेआम लूटा गया होगा, पर आज फ़खर के साथ कह सकता हूं कि एक मुख्यमन्त्री के पहाड़ी टोपी पहनने से लोगों में जो हीन भावना आ जाती होती पहाड़ी टोपी पहन कर वह चली गई है और बिल्कुल ही चली जाएगी अगर हम सब पहाड़ी टोपी पहनना आरम्भ कर दें। यह शुरुआत उन लोगों से होनी चाहिए जिनकी देश में पूछ है, पहचाहन है और जो देश के माने हुए सपूतों में हैं, तब जाकर पहाड़ी टोपी को हीन भावना से नहीं देखा जायेगा। यह टोपी भारत का ताज बन जाएगी। पहाड़ी टोपी को ऊंचा स्थान देने के लिए न जाने वीरभद्र जी को मेरे जैसे कितने आदमी श्रद्धा से पूजते हैं। यह तो हर पहाड़ी जानता है। पहाड़ी टोपी की इज्जत, पहाड़ी संस्कृति की इज्जत है। पहाड़ की इज्जत है।

ये पहाड़ रहेंगे, इसकी संस्कृति रहेगी और पहाड़ की संस्कृति को कायम और इज्जत देने वालों की ये पहाड़ हमेशा-हमेशा याद करते रहेगें। जिस प्रकार पहाड़ से नदियां निकलतीं हैं और सबकी प्यास बुझातीं हैं, उसी प्रकार पहाड़ी भी खुद को लुटाकर भी लोगों की पैसे की प्यास भले ही बुझाता रहे। परन्तु पहाड़ियों को मूर्ख समझने वाले इससे बाज आयें और पहाड़ी टोपी को सम्मान की नजर से देखें। ये सब वीरभद्र जैसे लोगों के प्रयत्न से ही सम्भव हो सकेगा।

"अपंग"

बस लुड़कने लगी और मैं असहाय उसमें पलटे खाने लगा। एक पलटा दूसरा फिर तीसरे पलटे पर कोई भारी सी चीज मेरी पीठ से टकराई और फिर उसके बाद मुझे चीखें सुनाई देना भी बन्द हो गई। फिर लगा मुझे कुछ लोग उठा रहे हैं। ये क्या मेरे साथ मेरी टांगें क्यों नहीं। क्या दुर्घटना में मेरी दोनों टांगें चली गई। मैं चिल्लाना चाहता था पर मेरी आवाज नहीं निकल रही थी। एक बार फिर मुझ पर बेहोशी छा गई। जब आंखें खुली तो मैं हस्पताल में था। मेरी बायें बाजू पर ग्लूकोज चढ़ा था और टांगें जैसे मेरे साथ नहीं थी। टांगें ऊपर उठाने की कोशिश की पर कुछ भी ऊपर नहीं उठा। मैंने घबराहट में दांए हाथ से टांगों को टटोला। टांगें सही सलामत थी पर ये मुझ से ऊपर क्यों नहीं उठ रही है। यह सब मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं कोई भयानक सपना देख रहा हूं जो आज तक नहीं टूटा और हकीकत बन गया है। कभी-2 जोर से अपने हाथ को काट लेता हूं ताकि यह आठ महीने लम्बा भयानक सपना टूट जाए।

बड़ 2 हस्पतालों से छुट्टी मिलने के बाद मैं आज एक छोटे हस्पताल में लेटा ठीक होने की उम्मीद कर रहा हूं। बहुत रोकने पर भी मेरा पेशाब नहीं रुकता। बस बून्द-2 निकल कर मेरा बिस्तर खराब करता रहता है। आठ महीने के बाद भी मेरी टांगें हिल नहीं सकती। बेजान बनी मेरे जिस्म का हिस्सा बनने का असफल प्रयत्न कर रही है। आहिस्ता-2 मेरी टांगें कमजोर भी पड़ने लगीं हैं। क्या मैं कभी चल भी सकूंगा। यह ऐसा प्रश्न हैं जिसका हर कोई उत्तर टाल देता है। डाक्टर कहते हैं कुछ चीज असम्भव है। अभ्यास करते रहो एक दिन तुम जरूर

चलने लगोगे । कहीं मुझे वे यूं सांत्वना ही तो नहीं दे रहे। उन्होंने तो कहा था औपरेशन के बाद ठीक हो जाएगी तुम्हारी टांगें । तुम्हारी रीढ़ की हड्डी टुटी नहीं दबी है । फिर ओपरेशन भी तो अब हो चुका है फिर भी उसी तरह बेजान है मेरी टांगें । कहीं मैं झूठी आशा पर ही तो नहीं जी रहा । पहले केथेटर चढ़ा रहता था तो पेशाब की कोई समस्या नहीं थी । अब तो बस चौबीस घण्टे पेशाब रोकने का ही प्रयत्न करते रहो ।

मुझे आज भी वह दिन याद आ रहा है जब सारा परिवार मेरा डिप्लोमा में सीट मिलने पर खुश हो गया था । जिन सड़कों पर कुली का काम करते-2 मेरे पिता जी ने अपनी जवानी काट दी थी उन्हीं सड़कों पर मैं ओवरसीयर बनूंगा । जो मस्ट्रौल हर महीने पहली तारीख को पिता जी को लाटरी जैसे लगता है उसका मैं तीन साल के बाद मालिक बन जाऊंगा सोचकर कितना खुश हुआ था मैं । मस्ट्रोल मिलने का समय आया तो यह अचानक दुर्घटना । मेरी तीन साल की मेहनत पिता जी का उमर भर का सपना भगवान ने क्षण भर में खत्म कर दिया । भगवान मेरा डिप्पलोमा वापिस ले लो पर मेरी टांगें वापिस कर दो । मैं कुली का काम करके भी अपने परिवार का पेट भर लूंगा पर भगवान मेरी इन सूख रही टांगों में शक्ति भर दो । रात दिन मेहनत मजदूरी करके मुझे पढ़ाया और अब भी मैं बोझ बना उनसे सेवा करा रहा हूं । कभी बैड पैन पकड़ा रहे हैं कभी चम्मच से खाना खिला रहे हैं । भगवान मुझे मार क्यों नहीं दिया । मर गया होता तो यह आठ महीने की यातना से भी छूट जाता और कुछ पैसे भी तो मिल जाते पिता जी को । वे पैसे भी बच जाते जो पिता जी ने मेरे ईलाज के लिए अब तक खर्चे । आजतक मैं भी तो कहता रहा हूं कि मुझे बड़े हस्पताल में ले चलो । वहां भी ले गए । मेरा ओपरेशन करवा दो । वह भी करवा दिया । उन्होंने तो कोई कसर नहीं छोड़ी और आज भी मेरे ईलाज के लिए सब कुछ बेचने को तैयार हैं । शायद उन्हें उम्मीद है कि उनका मस्ट्रोल कभी मेरे हाथ होगा । पर मेरी उम्मीद टूट रही है ।

क्या वह भी मुझे देखने नहीं आएगी : जो पूरी उमर साथ निभाने की कसमें खाया करती थी । पहले तो गरीब परिवार से ही था अब तो जिस्म से भ ंग ीब हो गया हूं । अपंग के साथ कौन जिन्दगी काटेगा । तुम सच्ची हो पर फिर भी बहुत याद आती है तुम्हारी । बिस्तर पर लेटे मैं याद ही तो कर सकता हूं । डरो मत मैं अब तुम से शादी करने के लिए नहीं कहूंगा । मैं इस काबिल ही नहीं अब । फिर भी तुम से मिले बगैर मैं चैन से भी तो नहीं मर सकूंगा । तुम्हारे प्यार में तो मुझे कोई खोट नजर नहीं आता था । मुझे यकीन है तुम आज भी मुझ से प्यार करती हो पर अपना नाम मुझ से जोड़ कर तुम्हें बदनामी के सिवाय और क्या मिलेगा । जो मेरी टांगें मुझे सहारा नहीं दे रही हैं तुम्हें क्या देगी । मुझसे अब मिलना भी नहीं । तुम मेरी हो इसलिए तुम्हारी भलाई चाहता हूं ।

बचपन में जब मैंने चलना नहीं सीखा था तब भी मेरे मां बाप मेरी सेवा करते होंगे । तब तो उन्हें मालूम था मैंचलने लगूंगा पर आज भी क्या उन्हें उम्मीद है । एक बार चलकर टांगें अब चलना क्यों भूल गई । बहुत जोर लगाता हूं अपनी टांगों पर मैं थक भी जाता हूं पर टांगें हिलती नहीं । भगवान मेरी टांगों को नई शक्ति दो । फिर सारे सपने साकार कर दूंगा मां बाप के । फिर पिता जी को मस्ट्रोल के लिए तरसना नहीं पड़ेगा । फिर तो मैं उन्हें काम ही नहीं करने दूंगा ।

मैंने आज तक भगवान द्वारा दी गई टांगों की कीमत नहीं समझी थी । आज टांगें नहीं चल रही है तो इनकी कीमत महसूस कर रहा हूं । पैसों से इनकी कीमत लगाई ही नहीं जा सकती । सोचता रहता हूं कि टांगें चलतीं तो ये करता वो करता । जब चलती थी तो दिमाग नहीं चलता था । क्या तब मैं दिमागी रुप से अपाहिज था ?

मैं चल सकता तो अपने मां बाप की सेवा करता । अपना काम ईमानदारी से करता । अपनी जिन्दगी अपंगों की सेवा

में लगा देता। जितने भी यहां मरीज पड़े हैं उनको वैड पैन देता उनकी सेवा करता उनको अपने हाथों से खाना खिलाता। दो वक्त की रोटी खाकर बाकि पैसों से दवाईयां खरीद कर मरीजों को बांटता। टांगें होतीं तो कभी भी सुखराम, रेलुराम और पुनीया को मरने नहीं देता जो दवाई और सेवा की कमी के कारण मर गए मेरे सामने ही आठ महीने में। मैं अपंगों का का सहारा होता। में उन्हें महसूस ही नहीं होने देता कि वे अपंग हैं। मुझे मालूम है अपंग अपनी अपंगता के कारण नहीं मरता परन्तु प्यार की कमी के कारण मरता है। मेरी टांगें होती तो मैं किसी के जिस्म से प्यार नहीं करता किसी के पैसे से प्यार नहीं करता किसी की नौकरी से प्यार नहीं करता। प्यार करता तो आत्मा से जो हमेशा रहती है। भले उसकी टांगें टूट जाए उसका जिस्म कोढ़ से भर जाए उसका सब कुछ उससे छीन लिया जाए फिर भी मैं उसके अंग संग रहता कभी उसे नहीं छोड़ता। आज कितने लोग टैलिविजन के लिए, फ्रिज के लिए, चन्द पैसों के लिए नाता तोड़ देते हैं। नौकरी छूट जाए तो पति को छोड़ देते हैं। क्या ये लोग दिमागी तौर पर अपंग नही। मुझे लगता है मुझ से ज्यादा अपंग है बिल्कुल सौ प्रतिशत। फिलहाल मैं तो चल नहीं सकता पर आप सब तो चल रहे हैं। आप क्यों नहीं मेरी तरह सोचते। आप सब ठीक से चलने लग जाओगे तो शायद मैं बिना टांगों के भी चलने लग जाऊं।

बेताज बादशाह

मंझला कद, गहरे सांवले रंग पर सजा थ्री पीस सूट टाई के साथ उसके व्यक्तित्व को निखार कर रख देता है और वे जब अपने ऑफिस में घुसते हैं तो उनके इन्तजार में बैठे पन्द्रह-बीस आदमी उनके साथ ऑफिस में जाते हैं तो लगता है मानों बहुत बड़ा नेता अपने अनुयायियों के साथ आ रहा हो । अपनी जगह लेते ही फिर उनका दरबार लग जाता है । कोई नौकरी लगने आया है, कोई मकान बेचने आया है, कोई मरीज दिखाने आया है, कोई बिदेश जाना चाहता है यूं कहिए बादशाह के पास सब मरजों की दवा है । टैलिफोन घुमने के साथ ही सबकी समस्याओं का हल निकलने लगता है । बीच-बीच में डाक्टर आते रहते हैं और वे सब को सलाम कर अपने काम में व्यस्त रहते हैं । लगता ऐसा है जैसे बादशाह कोई बड़े डॉक्टर हो और वे छोटे डाक्टर उनको सलाम करके इधर उधर जा रहे हों पर वे हमेशा मरीज को बताने के लिए दूसरे डॉक्टरों के पास जाते हैं । यह मेरी पहचान का मरीज है कृपया इसे देख लो । इसका एक्स-रे कर लो इसका ब्लड टैस्ट करवा लो । जब यह सब कहते हैं तो लगता है मानो एक बास अपने अधीनस्थ कर्मचारी से बात कर रहा हो । बादशाह को आप कभी भी मरीजों को साथ लेकर एक ओ. पी. डी. से दूसरी ओ. पी. डी. की ओर भागते देख सकते हैं । फिर चाय का दौर चलता है । बादशाह को चाय का शौक नहीं घर में कभी चाय नहीं पीते फिर भी दूसरों को चाय पिलाने से परहेज नहीं करते । कुछ समझ नहीं आता है ये है कौन । क्या डॉक्टर, क्या व्यापारी क्या राजनितिज्ञ, क्या दलाल उनका दरबार देखकर तो लगता है कि ये सब कुछ एक साथ है । आल इन वन ।

मेरा इनसे परिचय करीब बारह साल पहले हुआ था। तब मुझे लगा था कि ये डॉक्टर होगें क्योंकि डाक्टरों के सिवाय सभी इन्हे डॉ० साहब डॉ० साहब कहके पुकारते थे। पर अगले ही क्षण दोस्ती होने पर पता चला कि ये डॉक्टर नही। फिर भी जितने लोग उनको डॉक्टर बोलते हैं उतने लोग आज तक मुझे डॉक्टर नही बोले। ये क्या काम करते है मुझे आज तक मालूम नही पड़ा सिर्फ इसके की वे स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत है और करीब तीस साल से शिमला में ही विराज मान है। जब भी चलते हैं तो एक भीड़ के साथ। आहिस्ता-2 भीड़ घटने लगती हैं और वे वापिस घर जाने की तैयारी शुरु कर देते हैं। तभी एक आदमी उनके आफिस में हाथ जोड़ कर आकर कहता है मुझे दो सौ रुपयों की सख्त जरुरत है। बिना एक क्षण खोये हीं वे तपाक से दो सौ रुपयों का चैक काट देते हैं। ये क्या एक नौजवान लड़का एक लड़की के साथ अन्दर घुसा। लड़का लड़की के साथ शादी करना चाहता है। लड़की के घर वाले तैयार नही। बादशाह है कि उन्हे आर्शीवाद दे बैठता है और थोड़े दिनों के बाद देखते है कि उनकी शादी सच मुच हो गई। लड़के लड़की के मां बाप से बादशाह खुद निपट लेते हैं।

एक दिन मैं जब उनके आफिस में गया तो वे साड़ियाँ बेच रहे थे। औरते बैठी साड़ियों की कीमत लगा रही थी और वे बखूबी साड़ियों के व्यापारियों की तरह मोल तोल कर रहे थे। ग्राहको के जाने पर मेरे पूछने पर कहने लगे किसी दोस्त की साडियां थी मुझे बेचने के लिए कह गए थे तो बेच रहा हूं। कुछ अपने पैसों की भी एडजस्टमैन्ट हो जाएगी। बस पैसों की एडजैस्टमैन्ट के लिए इनसे कुछ भी करा लिजिए।

जब से मैं इन्हे मिला हूं मैंने हमेशा इन्हे पैसों से तंग देखा है। हमेशा पिछले महीनों हुए ज्यादा खर्च की ही एडजैस्टमैन्ट करते देखा। पैसों की कमी में भी उन्हे दूसरो को उधार देते हुए देखा जा सकता है। चैक काट देंगे बिना पैसा बैंक में हुए भी

फिर कही चैक डिस आनर न हो जाए इसलिए फिर से एडजैस्ट-मैंट में पड़ जाते है। मुझे दो सौ रुपये दो मैं अभी आपको वापिस करता हूं। मैं जरा घर चैक बुक भूल आया हूं। जिस चैक बुक से चैक काटा उसी चैक बुक को भूलने का बहाना कर दो सौ रुपये उधार ले लिए। बस यही बादशाह की आदत मुझे पसन्द नही। पर है वे आदत से मजबूर।

किसी ने दो आंसू बहाए नही कि उनका दिल पसीजा नही। फिर करवा लो कुछ भी। कुछ साल पहले मैंने उन्हे एक लड़की के साथ अक्सर घूमते देखा। पूछने पर पता चला वह दुख की सताई हुई है। बाप के मरने के बाद मां उसे बाप के दोस्त के पास छोड़ गई थी ताकि वे उसे बाप के बदले मिलने वाली नौकरी दिला सके। थोड़े ही दिनो के बाद बाप के दोस्त की बुरी नजर उस पर पड़नी शुरु हो गई। फिर नौकरी दिला कर वह उससे वंचित नहीं होना चाहता था। बुरी नजर का शिकार होने से पहले बादशाह के सम्पर्क में आ गई और आदत से मजबूर उसे अभय दान दे बैठे। लड़की को बूढ़े से बचाकर उसका सारा खर्च वहन करना शुरु कर दिया। लड़की उनके अहसान में दबने लगी और वहां बादशाह कर्ज में। इतने बड़े परिवार के साथ लड़की का अलग खर्चा चलाना मुश्किल हो गया था बादशाह को पर फिर भी एडजैस्टमैंन्ट चाल थी। इसकी टोपी उसके सर। घर में बीबी को लड़की का उनके साथ सम्पर्क नही भाया और होने लगो रोज खटपट। यहां वह लड़की की पूरी जिम्मेदारी ले बैठा था और वहाँ बीबी के रोज के तानों ने दुखी कर रखा था। आखिर दो नाव में कब तक पाव रखता वापिस अपनी ही नाव में आ गया।

इस तरह बादशाह एक पंगे के बाद दूसरा पंगा लेते रहते है। इन पगों से जब शाम को फुरसत पा बादशाह सब्जी मण्डी से गुजरते है तो अपनी मन पसन्द के टमाटर लेना नही भूलते।

शौक से सब्जी खरीदते वक्त वे एक दो नीबू चुराने भी नहीं भूलते। मेरे पूछने पर कहते है कि मैं तो एडजैस्ट कर रहा हूं वे पैसे जो सब्जी वाले ने ज्यादा लगाए है। फिर ठाठ से वे बस में बैठ जाते है सब्जी के साथ। टिकट उनसे कोई मांगता नहीं यदि साथ वाले से मांग ही ले तो स्टाफ कह कर चुप करा देते हैं।

घर पहुंचने पर शुरु हो जाती है उनकी साफ सफाई। पूरा दिन डाला हुआ बच्चो द्वारा गंद वे क्षण में ही साफ कर देते हैं। इस बीच वे बीवी और बच्चो को यथास्थान चीज न रखने के कारण गुस्सा होते रहते है। बीवी के बिमार होने पर वे रोटी बनाने का काम भी मिनटों में कर लेते है। उनके द्वारा बनाई गई टमाटर की चटनी जो उनके रोज के आहार की हिस्सा है खाते-2 पूरे दिन का बोझ उनके सर पर आ जाता है। कल किस की शादी करनी है किस को टैलिविजन खरीदना है किसका ब्लड टैस्ट करवाना है आखिर यह सब बोझ क्यों क्यों सिर्फ एडजैस्टमैन्ट के लिए।

कई बार मुझे लगता है बादशाह अपने सर पर इतना बोझ क्यों डाले रखता है क्या पूरी उमर वे इसी तरह एडजैस्टमैन्ट में लगे रहेगे। क्या जो वेतन मिलता है उसी से बादशाह के परिवार का गुज़ारा नहीं हो सकता। यदि हो सकता है तो ये सब फिर क्यों। कई बार कहता हूं कि बादशाह आराम की जिन्दगी जीओ। इतना वेतन मिलता है फिर ये भाग दौड़ क्यों। ये परेशानी क्यों यह रात की नींद हराम क्यों। लगता है इन सब से बादशाह तंग तो आ गया है पर उस भीड़ का क्या होगा जो उसके ऑफिस के बाहर रोज़ लगती है। रोज नई-2 समस्या लिए आए लोग कहाँ जाएंगे।

बादशाह का ढ़लता शरीर शायद एक दिन इन सब उलझनो को छोड़ देगा। पर वह भीड़ कहाँ जाएगी। कौन उनकी समस्याओं का हल करेगा। फिर बादशाह को पैसो के लिए

बदनाम करने वालों को चार गुना पैसे देने पर भी उन जैसा मसीहा नहीं मिलेगा जो चन्द आसुओं के बदले में अपना महीनों का चैन खो देता है और उनकी हर समस्या का हल करने का दम रखता है।

फिलहाल तो सारे जहाँ का दर्द उनके जिगर में है।

सावधान : कृष्ण पैदा हो चुका है।

जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब तब कृष्ण पैदा होते हैं। जिस तरह अन्धकार का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता। हां जब रोशनी नहीं होती तो कहते हैं अन्धेरा है अन्धकार है। इसी तरह अधर्म का भी अपना कोई अस्तित्व नहीं होता। जब प्रकाश आ जाए तो अन्धेरा दूर हो जाता है, जब ज्ञान हो जाए तो अधर्म का नाश हो जाता है।

अज्ञान बहुत फैल चुका था संसार में। लोगों को गुमराह किया जा रहा था। सम्भोग से समाधि प्राप्त करने के तरीके बताए जा रहे थे। आनन्द को ही परमानन्द समझा जा रहा था। बहुत भटकन हो गई थी समाज में। किसी अबला को अकेला चलना मुश्किल हो गया था। औरत से मां बहन का रुप खत्म हो गया था, संसार में बहुत मुसीबत आ गई थी। हमारी दृष्टि बदल गई थी। कितने बलात्कार हो रहे थे। कितनी बहनों को वैश्या बनाने का प्रयास किया जा रहा था। कई राष्ट्र तो अपनी मां बहनों का व्यापार करके ही प्रसिद्ध और समृद्धि को प्राप्त करना चाहते थे। हमारी बम्बई में भी एक लाख के करीब मां बहनें अपनी देह का व्यापार कर रही थी। करोड़ों रुपयों की देह चन्द रुपयों का खिलौना बन कर रह गई थी।

कई लोगों ने तो वैश्यवृति की वकालत करनी शुरु कर दी थी। कहने लगे थे, गन्दगी को निकालने के लिए नालियों की जरुरत तो होती ही है। अगर ये वैश्याएं नहीं होंगी तो सारा समाज ही गन्दा हो जाएगा। जब एक मुहल्ले में एक घर कोठा बन जाए तो क्या सारा मुहल्ला ही कोठा नहीं बन जाता ?

चलो एक पूरे मुहल्ले को ही कोठे में बदल दें लालबती क्षेत्र घोषित कर दें तो भी क्या वह मुहल्ला उससे कट जाता है । जरा सोचो जिस तालाब का पानी हम पीते हैं उसे हम खराब करना शुरु कर दें तो क्या कभी हमें साफ पानी मिल सकेगा । समाज भी इसी तरह एक तालाब है । इसका छोटा सा भाग भी अगर गन्दा रह जाए तो सारा समाज गन्दा हो जाता है ।

कितना गन्दा हो गया था समाज । देह का व्यापार कितना आसान लगता था इसे । तब तक बेची जाती थी देह जब तक खरीददार नहीं रहते थ । अब खरीददार देह के रहते रहते ही खत्म हो जायेंगे । क्योंकि कृष्ण फिर से पैदा हो चुका है । अधर्म का नाश करने के लिए धर्म की स्थापना करने के लिए "एडस" के रुप में ।

अधर्मियों को चुन चुन कर मार रहा है एड्स । एड्स कह रहा है अधर्मियों आओ मैं तुम्हारा काल बन कर आया हूं । मुझे वायरस के रुप में भी देखोगे तो मेरे कई रुप नजर आयेंगे । जिन चकलाधरों को वैश्यालयों को कोई कानून नहीं बन्द कर सका एड्स हमेशा हमेशा के लिए बन्द कर देगा । अब कोई भी तालाब को गन्दा करने की कोशिश नहीं करेगा । जबलपुर में केनिया के छः अधर्मियों को जो छात्र थे निकाल कर बाहर फेंका है । अब कृष्ण से एड्स से कोई अधर्मी नहीं बच पाएगा । पापियों का एड्स चुन चुनकर समाज से बाहर निक लेगा और उन्हें हमेशा के लिए खत्म कर देगा । अब किसी अबला पर गन्दी नजर नहीं उठेगी । कौन कहता है कृष्ण पैदा नहीं होता है । एड्स पैदा हो चुका है और ललकार कर कह रहा है उन सेक्स गुरुओं को जो समाज को बहका रहे थे । आज हर वे भटके गुरु शिष्य कृष्ण के भयंकर रुप को देखकर थर-थर कांप रहे हैं । सेक्स से तौबा

कर ली है लोगों ने। उतना भयंकर रुप तो अर्जुन को भी नहीं बताया था कृष्ण ने। शरीर की बीमारियों के किटाणु से लड़ने की शक्ति कम कर देता है "एड्स"। थोड़े से किटाणु भी इतने बड़े शरीर को निगले जा रहे हैं। सब हैरान है और मैं कृष्ण के इस रुप के आगे नतमस्तक हुआ प्रभू का गुणगान कर रहा हूं। भगवान आपका यह छोटा सा रुप भी संसार के अधर्मियों का काल बना है यह सोचकर बार बार शिश श्रद्धा से झुक जाता है। भगवान तुम एक छोटे अदृश्य जीवाणु के रूप में आकर भी कितनी जल्दी धर्म की स्थापना कर रहे हो। यह सब सोचकर मैं बहुत प्रसन्न हो रहा हूं। बड़ी बड़ी समाज सुधारक समीतियां भी आपके आगे बिलकुल फीकी पड़ गई हैं। भगवान आपके ही द्वारा रचित दिव्य दृष्टि "सूक्ष्मदर्शी यन्त्र" द्वारा डाक्टर और साईंसदान आपको देख तो रहे हैं पर कृष्ण इस बार इस रुप में पैदा हुए हैं, उन्हें क्या मालूम। कृष्ण की लीला कृष्ण ही जानते हैं, भले ही हम कितनी ही सुक्ष्म दृष्टि से देखें। वे तो तुम्हें मारना चाहते हैं ताकि पापियों को बचाया जा सके। वे नहीं जानते कि कृष्ण के पांव में तो तीर लगेगा जरुर पर तभी जब सब पापियों को मार लेंगे। अधर्म का नाश कर लंगे, धर्म की स्थापना कर लेंगे। फिर शायद छोटा सा तीर भी कृष्ण को मारने के लिए काफी होगा वे तुम्हारे इस बिना गदा, चक्र के रुप को देख कर भयभीत हो गए हैं। आपके इस छोटे से रुप को खत्म करने के लिए उनके द्वारा आज तक अर्जित हथियार भी व्यर्थ हैं। एक एटम बम्ब जो विश्व का संहार कर सकता है, तुम्हारा संहार करने को असमर्थ हैं। प्रभु तुम धन्य हो। आपके इस अदभुत और उग्ररुप को देखकर सारा विश्व व्याकुल हो उठा है।

एडस के हर एक जिवाणू में मैं आपका एक मुख देख रहा रहा हूं। अनगिनत मुखों वाले हे 'एड्स' पापी दुराचारी कितनी आसानी से आप के ग्रास हो रहे हैं, यह देख कर मैं अचम्भीत हो रहा हूं। आपका नाम गुण सुनकर पापी लोग दशों दिशाओं में भागते हुए जा रहे हैं और सम्पूर्ण डाक्टर और साईंसदान आपके आगे हार माने, सिर झुकाए हुए हैं। आपका भगवन यह रुप देखकर मैं हर्षित हो रहा हूं।

हे कृष्ण आपका यह रुप देखकर मैं निश्चिन्त हो गया हूं। मुझे पूरा यकीन हो गया है कि तुम चाहे किसी रुप में आओ हमेशा साधु पुरुषों की रक्षा करते रहोगे, पापकर्म करने वालों का विनाश करते रहोगे और धर्म की भली-भान्ति स्थापना करते रहोगे।

मेरा तुम्हें "एड्स" के रुप में बार-बार प्रणाम।

दर्शन

दर्शन रात को आसमान के नीचे अपनी बनाई कम्बल पर सो जाता है और सुबह होते ही चल पड़ता है अपनी अनथक अनन्त यात्रा पर। यही यात्रा दर्शन की जिन्दगी है । लोग दो चार गांव पैदल चल पड़ते हैं तो बड़ी-२ फोटो छपती है अखबार में। पर वह तो जब से चलने लायक हुआ तब से चल ही रहा है और तब तक चलेगा जब तक कि चलने लायक रहेगा । जब पैदा हुआ तो मां चल रही थी । दर्द शुरु हुई थोड़ी रुकी तो काफिला रुक गया। आस पास घास देखी और वहीं डेरा लगा दिया बाप ने। कहते हैं दर्शन रात को पैदा हुआ। मां के जिस्म को ढकने के लिए कपड़ों की जरुरत भी न पड़ी रात के अन्धेरे ने साथ दे दिया। दर्शन का नाड़ु अपने ऊन के धागे से बांधकर पत्थर से काट दिया गया था। यह सब काम दर्शन की ताई ने किया था। दूसरे दिन से ही मां की पीठ पर पैदल यात्रा शुरु हो गई। दर्शन जब पांच साल का हुआ तो उसे ऊन का चोला और कमर पर ऊन का डोरा पहना दिया गया । शिवरात्री का दिन था। उस दिन, बहुत बकरे काटे गए सुखा ग श्त मनाया गया। कनस्तर के कनस्तर खाली हो गए उस रात तो शराब के। दर्शन तो आग के पास सो गया पर मां बाप सगे सम्बन्धियों के साथ गए रात तक नाचते और शराब पीते रहे। तब से हर साल शिवरात्री, दर्शन की जिन्दगी में एक बहार लेकर आती है । उस दिन सुबह से ही बकरा कट जाता है । शिव भगवान को भोग लग जाता है। फिर बोतलों पर बोतलें खुलती जाती हैं । पीपे के पीपे खाली होते जाते हैं चाटकों के। शराब के दौर पर रात गए तक नाच गाना होता रहता है । जाम पर जाम तब तक, जब तक के शरीर निढाल नहीं हो जाता । दर्शन ने जब भी

शराब मुंह से लगाई बेहोश होने से पहले नहीं छोड़ी। वैसे दर्शन पीने का आदि नहीं। दर्शन किसी विशेष मौके पर ही शराब को मुंह से लगाता है।

कमर पर काला ऊन का डोरा, छोटा सा सफेद रंग का ऊन का चोला, छोटी सफेद रंग की ऊन की टोपी में दर्शन पांच साल की छोटी उमर में ही गद्दी समाज का एक उपयोगी अंग बन गया था। भड़ बकरियों को उसे पहचान होने लगी थी। कभी उसकी कोई भेड़ गुम हो जाए तो दुसरों की ढेर सारी भेड़ों में भी उसे पहचान कर ले आता। तब से आज तक करीब अस्सी साल से दर्शन भड़ बकरियों के साथ चल ी रहा है। दिशा बदल जाता है पर चलना नहीं रुकता। पड़ाव पड़ते हैं पर मन्जिल नहीं बनते! बड़ी मुश्किल से साल में महीना भर रुकना हो जाए तो बहुत, नहीं तो चले ही हैं। दिशा एक ही है जहां बकरियों का घास मिल जाए।

काला अक्षर जरुर भैंस के बराबर है दर्शन के लिए पर हर भेड़ बकरी को अक्षर की तरह पढ़ लेता है वह। कौन भेड़ बिमार है ...किसका बच्चा होने वाला है. किस बकरी का कब दूध बन्द हो जाएग . किस बकरे को मरने से पहले ही काट कर बेच देना चाहिए यह सब दर्शन बखुबी जानता है। लगता है दर्शन भेड़ बकरियों की भाषा जान गया है। उसकी सीट्टी से ही भेड़ बकरि ां खींची चली आती हैं।

आसमान के नीचे पैदा हुआ और आसमान के नीचे पलते-ब आज बुढ़ा हो गया फिर भी किसी छत के नीचे रहने की जिज्ञासा नहीं की। छोटा दर्शन कहता भी है बाबा घर पर रहो। अब मैं बड़ा हो गया हूं। भेड़ बकरियों का काम हम खुद सम्भाल सकते हैं पर दर्शन को तो घर पर चैन ही नहीं।

एक वार वहुत विमार पड़ा दर्शन । अप्रैल का महीना था। काफिला वापिस नालागढ़ से धीड़ की ओर जा रहा था जहां का दर्शन रहने वाला है । पूरा रास्ता दर्शन को वुखार आता रहा । अव तो दर्शन के लिए चलना भी मुश्किल हो गया । काढ़ा पिलाते रहे, पर कोई आराम नहीं । खांसी इतनी थी कि साथ ही नहीं छोड़ती थी । तम्वाकु जिसका साथ उमर भर रहा, उसको भी भी छोड़ दिया फिर भी न जाए खांसी । आखिर एक दिन उठाकर ही ले जाना पड़ा डाक्टर के पास। डाक्टर ने कहा उसे निमोनिया हो गया है हस्पताल में दाखिल करना पड़ेगा। अस्पताल के डर से ही दर्शन का खांसना वन्द हो गया । डर से वुखार भी उतर गया था । मैं दाखिल नहीं हुंगा यह कहकर भाग हो ता आया था अपने पड़ाव पर । दुसरे दिन से फिर शुरु हो गई थी दर्शन की अनन्त पद यात्रा और निमोनियां दर्शन से कोसों दूर भाग गया था ।

लोगों की तरह उसे इक्कीसवीं सदी में पहुंचने की जल्दी नहीं है। वह तो लगता है अभी पाषाण युग में ही जी रहा हो । एक लोहे की पत्ती जिसको 'रुनका" बोलते है वहा आग जलाने का साधन है उसका । विशेष घास से निकाल रुई इस पर रख जोर से पत्थर से मारते है और वह रुई जल उठती है । है ना पाषाण युग की बात । दियासलाई को जरुरत ही नहीं । पहनावा वही जो अस्सी साल पहले मां वाप ने चोला और डोरा डाला था वही चल रहा है । हां उमर के साथ उसका साईज बदलता गया । नीचे गोछ के सिवाए कभी पाजामा नहीं पहना । नंगी टांगों के नीचे पांव में बड़े भारी चमड़े के जूते पहने दर्शन आज भी वुढ़ी हड्डियों का ढोए जा रहा है, ताकि भेड़ बकरियों का घास मिलतो रहे । खूद दा वक्त के सिवाए तीसरे वक्त

कभी खाना नहीं खाया। रात जब जंगल में पड़ाव पड़ा तो लकड़ी इक्कठ्ठी कर पत्थरों का चुल्हा बनाया और मोटो-2 मक्की की रोटी सेंक ली। ज्यादातर मक्की की रोटी और बकरी का दुध ही दर्शन की खुराक रही। शराब की तरह गोश्त सब्जी दाल तोर्थ त्योहार को बात है दर्शन के लिए। अब तो रास्ते में दाल सब्जी भी बनती है पर दर्शन को दूध रोटी ही भाती है।

दर्शन को गद्दन को मरे बीस साल हो गए पर वह आज भी रोज रात उसकी याद की हिस्सा होती है। जब दर्शन पच्चीस साल का हुआ तो उसका ब्याह पास के गांव की गद्दन से हो गया। वाह क्या शादी थी वह। दर्शन को शिव भगवान की तरह सजाया था। गले में नकली सांपों का हार .. कमर में मृग छाला..... एक हाथ में त्रिशुल तो दूसरे हाथ में डमरु .. माथे पर चन्दन का टोका। दशन उस दिन साक्षात महादेव हो तो लग रहा था। उसके बाद नहा धोकर फिर नये कपड़े पहनाए गए, सेहरा लगाया गया। बहुत बड़ी बारात थी। दस बकरे और पच्चास कनस्तर लगे थे शराब के। आधी बारात तो रास्ते में ही सोई रही। शीशे से जड़े चोलों को पहन गद्दनियां अप्सराओं से कम नहीं लग रही थीं। आज जब भी किसी की शादी में दशन जाता है तो अपनी शादी की याद ताजा हो जाती है। दहेज में चालीस भेड़ बकरियां और एक चरखा मिला था उसे। आजकल तो न जाने क्या-2 नहीं देते दहेज में। आजकल तो कनस्तरों की जगह बोतलें आ गई हैं रंग बिरंगी देशी बिदेशी। शादी के बाद गद्दन मायके चली गई रिवाज के अनुसार। साल भर नहीं भेजा था उसके मायके वालों ने। जिन्दगी का वह साल और अब के बीस साल गद्दन की मधुर याद में हो गुजारे है दर्शन ने। तब आने की आस थी अब जाने की है। एक साल के बाद जब गद्दन आई

तब तो दर्शन ने शराब और गोश्त से लोगों को नहला ही दिया । खुद दर्शन दस दिन लगातार शराब पीता रहा था ।

जब गद्दन के पैर भारी हुए तो उसे उसने घर पर ही रखा। वह नहीं चाहता था कि छोटा दर्शनु भी रास्ते में ही पैदा हो । उसे याद है वह गद्दन को अक्तुबर में घर छोड़ आया था । घर वापिस जब अप्रैल में पहुंचा तो छोटा दर्शनु तीन महीने का हो गया था। फिर गद्दन नहीं मानी । लाहुल स्पिति की तरफ जाते हुए वह भी छोटे दर्शनु के साथ काफिले में हो गई और मरने तक फिर साथ ही रही ।

छोटे दर्शनु को भी पांच साल के होते ही चोला और डोरा पहनाया गया । आज तो उसकी गद्दन भी है और तीन बच्चे भी । बच्चे बाप दादा की तरह भेड़ बकरियों के काफिले का हिस्सा न बन, बीड के स्कूल में पढ़ रहे हैं ।

दर्शन को तो जिन्दगी भर कोई जरुरत नहीं रहीं खाने को मक्की की रोटी और बकरी का दूध । तन ढकने को अपने द्वारा ऊन से बनाया चोला डोरी और रात को सोने के लिए दो कम्बल । कुछ भी बाजार से खरीदने की जरुरत नहीं । मक्की का आटा "बकराहड़" में मिल जाता । दर्शन को क्रय शक्ति की जरुरत ही नहीं वह तो समाज को दे ही रहा है ।

मुझे दर्शन की तरह हर गद्दी भगवान शिव के गण लगते हैं । शिव की छत्रछाया में पले बड़े हुए ये समाज को हर क्षण दे ही रहे हैं । बकरे का गोश्त भेड़ों की ऊन बकरी का दूध और जहां रुकते भी हैं तो खेतों को खाद दे जाते हैं भेड़ बकरियों की मिंगड़ें । भगवान शव के कैलाश में बिचरते, समाज से कुछ नहीं मांगते । एक साधु की सी जिन्दगी जो चलते-2 भेड़ बकरियों का

पालन पोषण कर पशु धन की वृद्धि करते रहते हैं।

दर्शन ने अपनी अस्सी साल की उमर तक क्या क्या लिया होगा समाज से। कुछ मन मक्की का आटा, नमक, तम्बाकु, चन्द कनस्तर शराब के और इसके बदले में दी ढर सारी ऊन, मनो गोश्त, मनों खाद, दूध, घी। सौ भेड़ बकरियों से किया था शुरु काफिला आज पांच सौ भेड़ बकरियां हैं दर्शन के पास। दर्शन मुझे समृद्धि का दाता लगता है।

समाज में मांगने वाले को भिखारो और देने वाले को दाता वोलते हैं। आप भो जरा सोचो कि आप ससाज से क्या लेकर क्या दे रहे हैं। कहीं आप उस समाज को गरीब तो नहीं कर रहे जिस समाज को अमीर करने के लिए दर्शन रात दिन जुटा रहता है। अगर हां तो सम्भल जाओ क्योंकि समाज ऐसे आदमो को ज्यादा दिन बर्दाश्त नहीं करता और फिर भिखारो की जिन्दगी भी कोई जिन्दगी है।

शक्ति

जब भी धूप अगरबती की भीनी-2 खुशबू मेरे नाक में जाती तो लगता मैं, मैं नहीं रहा। अजीब सी बेहोशी छाने लगती और फिर जब मैं होश में आता तो हमेशा मेरे चारों तरफ एक बहुत बड़ी भीड़ लगी होती और वे लोग श्रद्धा से नतमस्तक हो मुझे देख रहे होते। कहते हैं अपनी बेहोशी के दौरान उस भीड़ के हर एक आदमी के हर प्रश्न का जबाब मैं इस तरह से देता जैसे मैं उनकी हर समस्या को केवल जानता ही नहीं, अपितु उनकी हर समस्या का समाधान भी मेरे पास हो। तभी तो करीब बीस साल पहले जिस भीड़ का आकार बहुत छोटा था पर आज बहुत बड़ी भीड़ हमेशा मेरे बेहोश होने का इन्तजार करती रहती है और मेरे निजी तो मुझे हमेशा बेहोश देखना चाहते है।

करीब बीस साल पहले का वह दिन मुझे आज भी याद है। गरीबी से तंग समस्याओं से घिरा मैं सड़क पर से मजदूरी का काम करके लौटा ही था। हाथ पांव धोकर रोज की तर खाना खाने से पहले काली मां के आगे धूप जला ही रहा था कि लगा मेरा शरीर मेरे साथ न हो। धूप की खुशबू मेरे नाक में अजीब सी हरकत कर रही थी और फिर गया मैं उसी बेहोशी में जो आज मेरा जीवन ही बन गई है। जब बेहोशी से जागा था तो मेरी मां और गांव का वैद्य मेरे आगे नतमस्तक होकर बैठे थे। मेरी मां ने कहा कि बेहोशी में मैं कांप रहा था और कह रहा था मैं काला हूं, मैं काली हूं, मैं काली हू। यहां मेरा मन्दिर बनाओ। मुझ ऐसा करते देख मां डर गई और वैद्य को ले आई। फिर भी मेरी बेहोशी और आवाज बन्द नहीं हुई। वैद्य के कहने पर उन्होंने मेरे आगे धूप जलाया और कहा माता काली हम तुम्हारा मन्दिर

बनाएंगे और यह कहते ही मेरा काँपता शरीर शान्त हो गया था। पर मुझे तो लगा था जैसे मैं किसी गहरी नींद से जागा हूं।

कुछ दिनों के बाद फिर ऐसा ही हुआ पर जब जागा तो दस बारह आदमियों की भीड़ थी और सामने पड़ी थी चान्दी की मुद्राओं से भरी गागर। यह क्या? मुझे बताया गया कि आज फिर मुझ में काली माता प्रविष्ट हुई और कहने लगी यहाँ मेरा मन्दिर बनवाओ। उनके कहने पर कि मन्दिर बनाने में तो पैसा लगेगा। देवी ने उन्हें गऊ शाला के पास गोल पत्थर के नीचे जमीन को खोदने के लिए कहा। जमीन खोदने पर ही चान्दी के सिक्कों से भरी यह गागर उन्हें मिली थी। इतनी दौलत जिन्दगी में मैंने पहली बार देखी थी। जब दो साल का था तो बाप मर गया था। माँ ने मुश्किल से पाला पोसा। बड़े होते-2 जमीन रिश्तेदारों ने हड़प ली थी। माँ अकेली किस-2 से लड़ती। जब से हाथ में थोड़ी ताकत आई तभी से पेट की आग बुझाने के लिए मेहनत मजदूरी करनी शुरु कर दी। आखिर माँ के कमजोर हो रहे हाथों को मेरे ताकत आ रहे हाथों का सहारा मिल गया और आराम से दो वक्त की रोटी मिलने लग गई। जिस उमर में लोग स्कूल जाते हैं उस उमर में मैं कमाने लग गया था। माँ भी कमाऊ पूत को जल्दी ही दुल्हन ले आई और बचपन में ही शादी हो गई। अभावों में बीत रही थी जिन्दगी। इतना धन सामने देखकर मेरी नियत डगमगाने लगी। दस साल से भी उपर हो गए थे मजदूरी करते पर एक चान्दी का रुपया भी नहीं बचा सका था मैं। मैं नहीं चाहता था मेरी तरह मेरे बच्चे भी अनपढ़ ही रहें। इन्हीं पैसों की कमी की वजह से ही आज तक अपनी जमीन नहीं छुड़ा सका था मैं। पैसा इकट्ठा हो जाएगा तब जाऊंगा वकील के पास, तब जाऊंगा पटवारी के पास, तब जाऊंगा प्रधान के पास। यही सुनहरे

सपने लेकर सो जाता और सुबह फिर काम पर लग जाता । इस पैसे से मेरी सारी जरुरतें पूरा हो सकतीं हैं । बीवी बच्चों के शरीर पर नये कपड़ .... नया मकान..... भर पेट खाना.. वकील की फीस, पटवारी की बोतल, प्रधान का मुर्गा । सब कुछ मिल मिल जाएगा इन पैसों से । पैसे भी तो मेरी गऊ शाला की जमीन से निकले हैं । मैं कह दूंगा मैंने दवाई थी यह गागर । लोगों को अचम्भे में डालने के लिए झूठ मूठ देवी का स्वांग रचा । मेरे में कोई देवी नहीं आई । यह सोचते हो मैं कांप सा गया । यह कहकर क्या मैं देवी से धोखा नहीं करुंगा ? जो देवी जो शक्ति दबे धन को निकलवा सकती है क्या वह मुझे मार नहीं सकती । वह तो सर्व शक्ति शाली है । देवी ने पैसे मन्दिर बनवाने के लिए दिए हैं । मुझे यह सब नहीं सोचना चाहिए । यह तो देवी की अमानत है । मेरा लालच कहीं मुझे तबाह न कर दे । यह सब सोच मन्दिर निर्माण समिति का गठन हुआ और फिर बनने लगा काली मां का मन्दिर । मैं भी सड़क का काम छोड़ मन्दिर के काम में जुट गाया । बीच-2 में काली मां मुझ में प्रविष्ट हो हमारा मार्ग दर्शन करती रहती । जब भी मुझ में काली मां आती लोगों की समस्याओं का हल करती । काली माता के अर्शीवाद से न जाने कितनी सूनी गोदें हरी हो गईं । कितनों के लाईलाज बिमारियों का ईलाज हो गया । कितने लोग हारे मुकदमों में जीत गए । जो जिस भावना से काली मां के मन्दिर में आता उसकी वह भावना पूरी हो जाती । मन्दिर के बनते-2 रोज एक अपार भीड़ लगनी शुरु हो गई । मेरे आगे धूप जलाया जाता । जैसे ही मेरे नाक में धप की खुशबु आती और मैं काली माता का ध्यान करता मैं बेहोशी में चला जाता । फिर काली होती थी और लोग ।

काली माता सब कुछ बताने में समर्थ होती । पूछने वाला

कहां से आया है क्यों आया है उसकी मुराद कब पूरी होगी। लोग हैरानी से देखते रहते और काली माता मेरे शरीर में प्रविष्ट हर प्रश्न का उत्तर देती रहती। यह शक्ति का ही चमत्कार था।

करीब बीस साल से लोग काली मां से जो मांग रहे हैं वह उन्हें दे रही है। देखते देखते यह स्थान गांव से शहर बन गया। जहां कभी खेती होती थी हरी भरी वहां दूर-2 तक पक्के मकान दिखाई देते हैं। जहां मेरी झोंपड़ी थी वहां एक बहुत बड़ा महल बन गया है। जहां शुरु में छोटा सा काली का मन्दिर बना था वहां बहुत विशाल काली का मन्दिर बन गया है। कहते हैं पांच लाख रुपए तो काली मां की मूर्ति बनाने में ही खर्च हुए। यात्रियों की भीड़ रात दिन लगी रहती है। दूर-दूर से यहां के लिए रात दिन बसें चलती रहती हैं। जहां कभी पैदल चल कर आना पड़ता था वहां मन्दिर के प्रांगण में ही बसें, कारें रुकती हैं। मान्दर का प्रांगण एक अच्छा खासा बस अड्डा लगता है। जहां रात बहुत अन्धेरी होती थी और छोटे-2 दीए अन्धेरे को मिटाने का असफल प्रयास करते थे। वहां अब रात बाकि ही नहीं। शाम होते ही सारा श.र बिजली की रोशनी से भर जाता है।

मुझे काली माता की तरह पूजा जाता है। लोग मेरे पांव में पड़ते हैं। मुझ से औलाद मांगते हैं। ऊंची पदवी मांगते हैं, पैसा मांगते हैं। क्या मैं इन्हें सब कुछ दे सकूंगा। यह मेरे शरीर का प्रश्न होता है। पर कहते हैं मेरे शरीर में काली माँ प्रवेश कर सबकी मन कामनाएं पूरी करती हैं। यह सब कैसे होता है मैं नहीं जानता। मुझे मालूम है मूर्ति और मैं सिर्फ नाम मात्र। यह पत्थर की मूर्ति और मैं हाड मॉस का कुली। शक्ति की वजह से मुझे और मूर्ति को पूजा जाता है, यह मैं भी जानता हूं। जब एक बहुत बड़ी लम्बी कतार मेरे चरण छूने को तरसती

है तो लगता है यह हाड मांस का शरीर देवी कृपा से कितना पूज्यनीय हो गया है।

मन्दिर कमेटी ने मेरे बच्चों को बहुत मंहगे कालेजों में पढ़ने के लिए भेज दिया है। मेरी पत्नी गहनों से लदी महारानी सी जिन्दगी व्यतीत कर रही है। पिछले साल मन्दिर कमेटी को चार करोड़ रुपए की आमदनी हुई। मन्दिर के आस पास यात्रीयों को ठहरने के लिए सरायें बना दी गई है। चौबीस घण्टे यहां लंगर लगा रहता है।

ज्यों-2 यात्रियों की भीड़ बढ़ जाती है त्यों-2 मुझसे मिलने पर पाबंदी लगाई जा रही है। मेरे चारों ओर लालचियों की भीड़ जम गई है। सुना है सराय होटल से मंहगी और लंगर में बिना पैसे वालों को घुसने नहीं दिया जाता। हर चीज़ की कीमत वसूल की जाती है। मेरे दर्शन के भी पैसे लिए जाते हैं। मेरी बेहोशी में वही लोग मिल सकते हैं जिन्होंने बदले में एक तगड़ी रकम दान की हो डोरा विभूति जो कभी मुफ्त भक्तों द्वारा बांटी जाती थी अब सरेआम बिक रही है। मुझे हमेशा देवी बुलाने के लिए तंग किया जाता है। मेरे आगे खूब धूप अगरबत्तियां जलाई जाती हैं ताकि मुझ में देवी प्रविष्ट हो जाए। जिसको खुशबू मात्र से मुझे बेहोशी छा जाती थी उसके पूरे धूंए से भी अब मझ पर बेहोशी नहीं छाती। मेरे काली मा। के पूरे ध्यान से समरण करने पर भी माया का जाल मेरे चारों ओर छाया रहता है। मुझे काली मां के बदले अपनी गहना से लदी बीवी नज़र आती है ... बड़े-2 कालेजों में पढ़ रहे अपने बच्चे नज़र आते हैं ..... दूध, हलवा, खीर, रबड़ी नज़र आती है ...रहने के लिए बड़े-2 भवन नज़र आते हैं .. पुजारियों के द्वारा मेरी बीबी के सामने दी वह धमकी याद आती है कि अगर

मुझ में देवी नहीं आई तो मेरी बाकी में देवी आया करेगी मेरे क्रिया कर्म होने के बाद। फिर न जाने क्यों मुझ पर बेहोशी छाने लगती है और अनाप शनाप लोगों के प्रश्नों का उतर देने लगता हूं।

मण्डी का अमिताभ

मुझे मण्डी के अमिताभ बच्चन से मिले वर्षों हो गए। मुझे यह भी मालूम नहीं वे आजकल बम्बई की किस झोंपड़ी पट्टी को शोभा बढ़ा रहे हैं। पर मुझे पूरा यकीन है वे जहां भी होंगे वापिस मण्डी आने के काबिल नहीं होंगे। अब तक तो वह जवानी भी ढल गई होगी जिस के जोश में वे मण्डी से भाग कर बम्बई पहुंच गए थे हीरो बनने। उस वक्त उन्हें लगता था कि बम्बई की फिल्म नगरी उनका बेताबी से इन्तजार कर रही है। सिर्फ बम्बई पहुंचना भर है कि सीधे हीरोइन की बाहों में। फिर गाड़ी-बंगला, रोज माधुरी, फिल्मी दुनियां, फिल्मी कलियां और न जाने कितनी पत्रिकाओं में उनकी सामने से पीछे से दाएं से बाएं से खींची हुई फोटो मण्डी के लोगों को देखने को मिलेगी। मण्डी को वापिस तो वे हवाई जहाज में जाने की सोचते। एक लम्बी सी गाड़ी से जब कभी वे घर जाएंगे तो लोग सारे इकट्ठे होकर बताएंगे मैंने तुम्हारी यह फिल्म देखी तुम्हारी माधुरी में बहुत अच्छी फोटो आई थी अरे जनाब आपने तो मण्डी का नाम रोशन कर दिया-अभी तक तो मण्डी से आप पहले हो हीरो निकले। मण्डी का नाम फिल्मी दुनियां में छा गया तो तुम्हारे कारण। फिर न जाने कितने लोग भाग जाते बम्बई को, मैं तो यही सोचकर परेशान होता हूं इस लिए खुश हूं यह सब कुछ नहीं हुआ कम से कम बम्बई को भागने से पहले अब लोग सोच तो लेते होंगे जो पहले गए उनका क्या हाल हुआ। अभी तक पर्दे पर नजर नहीं आए पर मण्डी का अमिताभ फिल्मी दुनियां के रुपहले पर्दे पर जरुर नजर आया था। मुझे याद है तब मैं बम्बई से वापिस आ गया था और अपनी निजी प्रैक्टिस मण्डी

में किया करता था। मण्डी में एक शोर मच गया कि एक फिल्म आई है जिसमें मण्डी के अभिताभ ने काम किया है। फिर क्या था कि लगे लोग धड़ाधड़ फिल्म देखने। वह फिल्म बम्बई में उतनी नहीं चली जितनी मण्डी में चल निकली। भगवान की अपार कृपा से जिस दिन मैं उस फिल्म को देखने गया तो अभिताभ जी भी बम्बई से वह फिल्म देखने मण्डी पधारे थ और मुझे सिनेमां हाल ही में ही मिल गए। भला मेरी उनसे पुरानी दास्ती देखते ही गले लगा लिया। सबकी निगाहें जो उन पर थी मुझ पर भी पड़ने लगी। अरे पूछो नहीं फिर क्या सिक्का जमा था हमारा। साथ बैठे फिल्म देखने अभिताभ के साथ। मैं उन्हें पर्दे पर ढूंढता रहा और लोग उन्हें अन्धेरे सिनेमा हाल में। उस दिन उन्होंने कपड़े भी जोरदार डाले थे। लाल रंग का सफारी सूट जो बम्बई में सिलाया था और उस वक्त तक इसने अभी सफारी सूट छुआ तक नहीं था। लोग मेरे भाग्य से जल रहे होते और मैं था कि मुझे बहुत जोरों से बम्बई की पुरानी याद आ गई। बहुत साल पहले ये अमिताभ जी अपने दोस्त के साथ बम्बई में मुझ से दांत निकलवाने आये थे। अपना नहीं अपने दोस्त का। दोस्त का परिचय कराया तो पता चला वे भी हीरो बनने हो बम्बई आए थे बहुत साल पहले। हिमाचल के थे, इसलिए एक हीरो को दूसरा हीरो मिल गया। अब तो खण्डराहत ही बताते थे कि इमारत कभी बुलन्द थी। उनका वह हाल हो चुका था जो मण्डी के अभिताभ का अब हुआ होगा। उन्होंने बम्बई में ही शादी कर ली थी और कुछ काम धन्धा करके रोटी कमा रहे थे। मेरे काफी इन्कार करने पर भी वे मुझे जबरदस्ती अपने साथ ले गए। पूरा दिन स्टुडियो में घुमाया। आज तक मुझे कभी पर्दे पर नजर नहीं आए और न ही आगे आएंगे ऐसे फिल्मी हीरो, प्रोड्यूसर और डायरेक्टरों

से मिलाया। मैं वह दिन आज भी नहीं भूलता, क्योंकि उसी दिन तो मैं एक ऐसे आदमी से मिला था जिसने एक फिल्म ब्लैक एण्ड व्हाईट में बनाई थी और जब बिको नहीं तो रंगीन प्रिन्ट में बना रहा था धड़ाधड़। वह उस पिक्चर का सब कुछ था। हीरो से लेकर लेखक तक। कहता था फिल्म बनाना आसान नहीं एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने के समान है। चढ़ते-2 न जाने कब बर्फ का तोंदा गिर जाए। मुझे पूरा यकीन है कि उन पर बर्फ का तोंदा जरुर गिर चुका है ! तभी तो न उनकी वह रंगीन फिल्म नजर आयी, न ही उनको कहीं फोटो।

रात को ये दोनों मुझे अपने घर ले गए। कहने लगे आज तो तुम्हें हमारे पास ही रहना है पर मैं था कि वापिस आ गया। उस दिन से बिछुड़ा मैं अभिताभ से आज ही मिल रहा था। आज का अभिताभ कितना खुश, कितना अमीर और कितना ताजा लग रहा था।

पिक्चर खत्म होने को थी और हमारे अमिताभ अभी सिर्फ एक सीन में नज़र आए थे जिसमें इन्होंने हीरो की मजबूती से बाजु पकड़ी हुई थी। मेरे पूछने पर इन्होंने बताया कि इनके तो पिक्चर में डायलॉग भी थे मगर कम्बखत कैंची चल पड़ी एडिटर की। चलो कुल मिला पर एक बड़ा हंगामा हो गया मण्डी में। मण्डी का आदमी कुछ क्षण रुपहले पर्दे पर आया और चला गया। तीन घण्टे में कुछ क्षण जिन्दगी में कुछ महीनों के बराबर तो होते ही होंगे। यूं मण्डी का अभिताभ पर्दे पर कुछ क्षण जीकर ही गुजर गया। न जाने कितने नौजवानों को गुमराह कर रहे हैं फिल्म वाले। जो हीरो बनने चले जाते हैं, उनको तो छोड़ो, मगर जो सिर्फ फिल्में ही देखते रहते हैं उनका ज्यादा बुरा हाल है। मजा कोई कर

रहा है और हम हैं कि बाहर बैठे ही मजे में हैं। तीन घण्टे बाद जब बीवी घर आती है तो अभिताभ, शशी, संजीव को ही ढूंढती रहती है अपने पति में अपना चेहरा नजर नहीं आता साड़ी नजर आती है, इसलिए हेमामालिनी की तरह साड़ी पहनने की फरमाईश करती है। टिकट का पैसा गया अलग और साड़ी एक नहीं सौ के करीब तो पहन ही लेती होगी हिरोईन फिल्म में।

आखिर कहां ले जा रही है आजकी फिल्में यह चिन्ता का विषय है। हकीकत से कोसों मील दूर। मैंने फिल्म में एक भी डाक्टर को पैदल चलते नहीं देखा। एक लम्बी सी कार मेरा उपहास नहीं करती जब मैं पैदल चलता हूं। डाईनिंग टेबल पर फिल्मों में ढेर सारी चीजें देखकर क्या अपना पटड़ा, दाल और झोल याद नहीं आता।

सिर्फ मनोरञ्जन और शिक्षा के लिए बने पिक्चर तो बुरा नहीं मगर आजकल कुली को बता दो कि तुमसे भी अमीर लड़की फंस सकती है तो बेचारा सामान कब ढोयेगा। अमीर बनने का आसान तरीका जो हाथ लग गया। अमीर बनने के आसान तरीके बताकर फिल्में हमें कहां ले जा रही हैं।

जब हमारे आदर्श इतने ऊंचे हों तो हमारा चरित्र कैसा होगा। जिसके कमरे में ही धर्मेन्द्र और अभिताभ की फोटो हो तो वह जरुर उन्हें पिक्चर में डाका डालते देखकर डाका ही तो डालेगा। मुझे कलाकारों से कोई गिला नहीं, उनकी तो यह रोजी-रोटी है। मुझ तो गिला है तो दर्शकों से जो नाटक को हकीकत समझ लेते हैं।

हमारा देश कृष्ण, राम और गान्धी का देश है। अभिताभ धर्मेन्द्र और शशी भी उनकी जिन्दगी पर्दे पर जीएं तो यह देश

फिर कृष्णों, रामों और गांधीयों का देश बन जाएगा। नहीं तो फिर हिंसा, लूटमार और बलात्कार तो आज देश में रोज हो ही रहे हैं।

अन्त में मण्डी के जैकियों, गोविन्दों और अनिलों से मेरी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि गर बम्बई जाना हो तो अमिताभ का पता पूछकर जाएं, सम्भवतः मण्डी के अमिताभ का पता है :—

मण्डी का अमिताभ
बम्बई का फुटपाथ,
स्टूडियो की गली में
भिखारियों के साथ।

पापी

हाल ही में दानुघाट में हुई बस दुर्घटना ने मुझे करीब बारह साल पहले पहुंचा दिया। मुझ आज भी वह सफर याद है जब मैं अपनी मां के साथ मण्डी से शिमला लोक सेवा आयोग में इन्टरव्यू देने जा रहा था। हमारी बस बिलासपुर में खराब हो गई। बिलासपुर कार्यशाला में बस को ठीक करने में काफी समय लग गया था। हम इस बस को ठीक होने का इन्तजार कर ही रहे थे कि पीछे से एक बस आकर वहां रुकी। वह बस भी शिमला ही जा रही थी। ट्रांसपोर्ट कार्यरत एक सज्जन जो हमारी बस में थे उस बस में चढ़ गए और हमें भी कहने लगे कि इस बस म चल पड़ो। न जाने इस बस को ठीक होने में कितना वक्त लगे। दिल तो चाहा उस पर ही चल पड़े पर बस का टिकट आड़े आया। हमारी बस के कण्डक्टर ने कहा कि थोड़ी ही देर में बस ठीक हो जाएगी। इसलिए हम रुक गए और वह बस हमें पीछे छोड़कर चली गई। बस ठीक होने पर हम भी शिमला की ओर चल पड़े।

ज्यों-ज्यों हम शिमला के नजदीक पहुंचने लगे, बस सवारियों से खचाखच भरने लगी। सीट के लिए सवारियों ने एक दूसरे से लड़ना शुरु कर दिया था। हर कोई पूरी सीट सम्भाले था और खड़ी हुई सवारियों से नजरें चुराये अपने सफर को आरामदायक बनाने की कोशिश कर रहा था। पर जब ज्यादा खड़े हो जाते हैं तो विद्रोह भी कर देते हैं। अब जब खड़ी सवारियां ज्यादा हो गई तो बैठने वालों को कहां शान्ति से बैठने देते। हो गई लड़ाई शुरु। अरे इस बूढ़े को बिठा ल। ..इस औरत ने बच्चा उठाया है इस पर तो तरस खा लो आपने टिकट लिया है तो क्या

हम मुफ्त सफर कर रहे हैं.....पीछे से आए हैं तो क्या हम पर एहसान किया है.....बस में एक तुफान आ गया था । जिस तरह खाते पीते नौकरी शुदा आदमी शान्ति चाहते हैं और पढ़े लिखे बेकार लोग क्रान्ति लाना चाहते हैं उसी तरह बस में बैठे हुए लोग शान्ति और खड़े हुए लोग क्रान्ति चाहते थे, क्योंकि हमेशा क्रान्ति में खड़े हुए बैठ जाते हैं और बैठे हुए खड़े ।

इसी धक्का पेली में हम दारलाघाट पहुंचे तो पता चला कि उस आगे वाली बस का दानुघाट के पास एक्सीडैण्ट हो गया है । गजब, दुर्घटना का नाम सुनते ही क्रान्ति शान्ति दोनों बन्द हो गई और उसकी जगह ले ली मानवता ने और सारी समस्याओं का हल हो गया। हर मुसाफिर सरक कर दूसरों को जगह देने लगा देखते-2 सब खड़े हुए बैठ गए ।

घटना स्थल पर पहुंचे तो थोड़ा-थोड़ा अन्धेरा होने को आ गया था । हमारी बस के सब मुसाफिर उतरकर राहत कार्य में जुट गए। मुझसे वह दर्दनाक दृश्य देखते नहीं बनता था । घायलों को उठाया जा रहा था । कुछ यात्री घटनास्थल पर ही दम तोड़ चुके थे और कुछ तोड़ रहे थे । जो सज्जन हमारी बस से उस बस पर चढ़े थे न वो घायलों में नजर आ रहे थे न ही मरे हुओं में । सुना उनकी लाश दूसरे दिन मिली । रात को हल्की-हल्की बारिश में उनका जिन्दा जिस्म न जाने कब तक भीगता रहा । सोचता हूं गर हम उस बस में चढ़ गए होते तो यह जिन्दा जिस्म बारह साल पहले ही लाश बन गया होता ।

राहत कार्य के बाद जब हमारी बस शिमला की ओर प्रस्थान करने लगी तो हमारा चालक भी बहुत सतर्क हो गया था । हर मोड़ पर हार्न बजाता था, हर सवारी की जुबान प भगवान का नाम था । सब सवारियां आसानी से प्यार से स

बैठी थी। उस वक्त बीस सवारियां और भी आ जाती तो भी हर सवारी उन्हें अपनी गोदी में बिठा लेती। आदमी वही थ, क्रान्ति और शान्ति वाली समस्या वह ही थी बैठने को,म गर हल नहीं हो रही थी। मानवता आई और समस्या हल। तब मुझे लगा ये शान्ति वाले भी ठग रहे हैं और क्रान्ति वाले भी। कुछ ऐसा ही घटना हो जाए कि मानव में मानवता आ जाए तो सारी समस्याऐं हल हो जाए। मुझे नहीं लगाता रोटी बड़ी समस्या है। खानी दो रोटियां और इक्कठी कर ली हैं दो लाख। फिर पेट नहीं भरता। स्विस बैंक जा रहे हैं रखने के लिए और विदेशी बन रहे हैं रखने के लिए। भगवान करे कुछ ऐसी घटना हो जाए कि सब में इन्सानियत पैदा हो जाए। फिर कौन मरेगा भूखा ?

हां तो उस दुर्घटना के बाद वहां एक मन्दिर बनने लगा। हर मुसाफिर दान देता प्रसाद लेता और ईश्वर से प्रार्थना करता फिर कभी ऐसी दुर्घटना न हो। मैं भी उसके बाद जब भी वहां से गुजरा पैसे देता। सोचता, कल यहां एक मन्दिर होगा, उस में पूजा होगी और भगवान आइन्दा ऐसी दुर्घटना से हमें बचाएगा। अब तो कुछ ईंटें भी इकट्ठी करवा दी गई थी वहां। धीरे-2 बसें रुकनी बन्द हो गईं। दुर्घटना की याद धूमिल पड़ने लगी और ईंटें भी गायब होने लगीं। अब तो एक टूटा हुआ गाड़ी का टुकड़ा ही पड़ा दीखता था वहां। जब भी मैं वहां से गुजरता यह नजारा जरुर देखता। लगता हमारा चन्दा बेकार हो गया जो मन्दिर बनाने के लिए दिया था। चन्दा लेकर कार्य पूरा न करने वाले पापी होते हैं। भगवान उनको फल देता होगा। मन्दिर नहीं तो उनका घर तो बन गया होगा। सोचता हूं कहीं आज देश ने हमारे पैसे से भीं तो कहीं घर ही तो नहीं बन रहे।

आज फिर उसी जगह दुर्घटना हो गई है । आठ आदमी फिर मर गए हैं । बारह साल के बाद । काश मन्दिर बन गया होता तो चालक हाथ जोड़ने के लिए तो कुछ देर रुकता, अपनी गति धीमी तो करता । शायद दुर्घटना नहीं होती । आठ-आठ आदमीयों का घर सूना नहीं पड़ता । पाप किसने किया और भोगा किसने ? हमें हर पापी को पाप से रोकना होगा, क्योंकि पाप, पापी को ही नहीं खाता धर्मी को भी खा जाता है ।

"आकांक्षा"

आकाश के नीचे मैं मस्ती से झूम रहा हूं यह जानते हुए भी कि कल मेरे छलनी जिस्म का काट दिया जाएगा। जो लोग मेरे जिस्म को पोस्टर पर पोस्टर टांग ल हे की कीलों से छलनी कर रहे थे उन्हीं के वर्जुगों ने मुझे यहां लगाया था। पर आज मैं उनके लिए व्यर्थ हो गया हूं। जो जगह मैंने घेर रखी है वहां वे दुकाने बनाना चाहते है। मुझे भगवान ने पैदा ही ऐसे किया कि मैं अपनी रक्षा खुद नहीं कर सकता। जब इस जगह भी लगाया था तो मेरी रक्षा के लिए बाड़ लगाया गया था ताकि पशु जाति मुझ खा न सके। इन्सान जाति ने लगाया था बाड़। कल उसी जाति के लोग मुझे काट कर खत्म कर देगें। फिर थोड़ा बड़ा हुआ तो बाड़ हटा दिया और मेरे चारों तरफ एक खूबसुरत टयाला उस समय बनाया जब मैं अपने यावन में कदम रख रहा था। टयाला बनाने के बाद एक बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन हुआ। मेरी पुजा की गई और मुझे ब्रह्मा का दर्जा दिया गया। मैं उस दिन बहुत खुश था। झुम-2 कर आए मेहमानों को हवा देता रहा। रात तक लोग दूर-२ से आते रहे और खाना खाते रहे। उस के बाद तो इन्सान के साथ मेरा चोली दामन का साथ हो गया। सुबह कोई मुझ पर पानी चढ़ा जाता ..... कोई मेरी परिक्रमा करता ..... कोई मेरे टयाले पर आ कर सो जाता। मैं भी मेहमानबाजी में कोई कमी नही रखता। मैं भी पेट भर उन्हे प्राणवायु देता ..... गर्मी में ठण्डी छांव देता ..... थके हारों को विश्राम देता। मुझे भी तो वे देवता की तरह ही पूजते थे। मेरे आस पास लगे भाईयों को भले ही वह जलाने

के लिए क ट देते पर मुझे कभी हाथ नहीं लगाते थे। मेरे भाईयों को भी तो वे बेरहमी से नहीं काटते थे। ध्यान से काटते कहीं उन्हें ज्यादा चोट न पहुच जाए। फिर जो निदयी वन कर काटा तो फिर मैं हा रह गया प्राण वायु देने वाला। उनके बजुर्गों द्वारा दिया गया ब्रह्मा का नाम हो मेरे बचने का कारण बना। मुझे काटना पाप समझा। जाता मेरी रक्षा करना मेरी सेवा करना पुण्य। मेरे चारों तरफ चक्कर काटते जो आदमी भी मुझेसे कुछ मांगता मैं उस मांग को अंन्नत आकाश तक पहुंचाता रहता और फिर अन्नत ही उनकी झोलियां भरता रहता। फिर अन्नत को उन्होने एक छोटे से मन्दिर में भरने की असफल कोशिश की। मेरे साथ ही एक मन्दिर का निर्माण हुआ। शिव भगवान की मूर्ति को स्थापना हुई। उस दिन भी बहुत बड़ा यज्ञ हुआ। मन्त्रों की मधुर ध्वनी से मेरा मन गदगद हो रहा था। इन्सान मुझे उस दिन कितना अच्छा लग रहा था। कितना भाई चारा लग रहा था उन का आपस में। नतमस्तक हुए कितने प्यार से मिल रहे थे एक दुसरे से। हवन को भीनी-. खुशबु से पूरा वातावरण महक सा गया था। मेरी तरह अन्नत आकाश भी मुझे झूमता नजर आ रहा था। उस दिन लोगों ने यहां पानी की बौड़ी बनाने की स ची। अन्नत खुश था, तो पाताल में पानी भी खुशी उछाले मार रहा था। थोड़ी सी खुदाई करने के बाद शिव पानी के रुप में प्रकट हो गए और फिर उसके बाद मेरे पास ही एक सुन्दर बौड़ी का भी निर्माण हो गया। हर रोज सुबह लोग फिर बाड़ी को साफ सफाई करने लगे और बौड़ी भी बदले में उन्हें स्वच्छ पानी देने लगी।

मेरा बौड़ो का और मन्दिर का साथ बहुत सालों तक रहा। हम अन्नत आकाश के नीचे प्राणियो की सेवा करते और वे हमारी। मंदिर लोगो के दुःख बांटता बौड़ी उनकी प्यास बुझाती और मैं

झूमते-? उन्हें प्राण वायु देता रहता। हर प्राणी एक दुसरे की सेवा करता रहता। इन्सान पशुओं की सेवा करते धरती मां की सेवा करते। धरती मां भी खुश होकर खुब अन्न की वर्षा करती गांए भैंसे खुब दूध देती। पक्षी प्रसन्न हो कर सुबह शाम गायन कर वातावरण को मधुर बनाते रहते। स्वर्ग ही तो बना दिया था। इन्सान ने इस स्थान को। अन्नत आकाश से मुझे यही आवाज आती रहती यही स्वर्ग है और ये इन्सान ही भगवान है। आज आवाज आती है यही नरक है और ये इन्सान ही राक्षस है। मैं भी तो नरक में ज्यादा दिन नहीं रहना चाहता था। अच्छा हुआ मुझे काटने का फैसला कर लिया गया। अन्नत कितना न्याय प्रिय है।

बहुत सालों तक स्वर्ग ही तो था यहां। सब ठीक चलता रहा पर अचानक एक दिन कुछ आदमी गांव में आए कहने लगे मन्दिर में भगवान नहीं होता। यह तो मस्जिद में होता है। शान्त वातावरण में यह कैसा कोलाहल। आज तक जो प्रश्न नहीं उठते थे आज उठने शुरु हो गए इन्सान के मन में। सचमुच मन्दिर में तो आज तक हमें भगवान नहीं मिले शायद मस्जिद में मिल जाएं। खुदा की तलाश में मुसलमान हो गए। मैं तो जानता था कि अन्नत आकाश को बान्धना इतना आसान नही। बान्धने की कोशिश की और यही सबसे बड़ी भूल हो गई। क्योंकि वह तो मन्दिर रुपी ढांचे में भी आ जाएगा और मस्जिद रुपी ढांचे में भी आ जाएगा। वह तो उसी में आ जाएगा जो उसका ध्यान करेगा उस का आवाहन करेगा और वह तो है ही हर जगह। इन्सान भगवान का रुप होकर भी अपना रुप भूल मन्दिर और मस्जिद के झगड़ों में पड़ गए। अलग अलग नाम रखने शुरु कर दिए। पूजा की विधियां बदल गई। वह भी मुझे मन्जूर था चलो किसी बहाने सभी उस अन्नत को याद तो करते है

और हमेशा नेक काम मे लगे रहते हैं। फिर हम चार हो गए मैं, बौड़ी, मन्दिर और मस्जिद। हमारी खूब अच्छी लरह निभने लगी। अल्हा हूं अकबर, ॐ नमः शिवाय से सारा वातावरण पवित्र होता रहता और मैं झूमता अपना धर्म निभाता रहता।

एक से दो बन गए थे और दो बनते ही छोटे बड़े की बात आ जाता है। मन्दिर वाले बोले हम बड़े मस्जिद वाले बोलें हम बड़े। बडा बनाने के लिए धर्म गुरु भी पैदा हो गए। पन्डित बोले मन्दर बड़ा मुल्ला बोलें मस्जिद बड़ी। अन्नत देखता रहा कि अन्नत तो अन्नत है और अन्नत भी कभी बड़ा छोटा हुआ। पर मुल्ले पण्डितों ने तो अपनी रोटियाँ सेकनी थी इसी बात पर। क्योंकि जब तक वे बड़े छोटे के चक्कर में लोगों को डाले रखगें तभी तक उसकी पूछ है। अगर कह दिया सब एक है तो झगड़ा नहीं। जब झगड़ा नहीं तो झगड़ालू धर्म गुरुओं की भी जरुरत नहीं। धर्म गुरुओं के होते-2 झगड़ा ही तो होगा। वाद विवाद में ही समय खत्म होने लगा। अब बौडी में मस्जिद वाला पानी नहीं भर सकता था। मुसलमानों ने कुआं खुदवा दिया। अन्नत नहीं चाहता था कि यह सब हो। पाताल में पानी भी दुखी था तभी तो बहुत गहरा खोदना पड़ा था उन्हें कुँआ पानी के लिए।

अब हम पांच हो गए। कुआ भी हमारे साथ था। कुंए और बौड़ी का धर्म नहीं बदला पर इन्सान का बदल रहा था। फिर वही हुआ जिसका मुझे डर था। इन्सान का खून बहा और हम पांचों लाल हो गए। सब का खून हमें लाल कर रहा था। इन्सान आखिर इन्सान था तभी तो खून लाल था पर धर्म गुरु तब भी बाज नहीं आए। उनकी प्यास आजतक नहीं बुझी तो उस खून से क्या बुझनी थी। मारकाट के बाद गांव में दो से एक हो गए इन्सान क्योंकि मुसलमानों को काट कर कुंआ भर दिया था

और मस्जिद को गिरा दिया था ।

अब हम फिर तीन रह गए थे। मैं अब फिर पांच नहीं बनना चाहता था। गांव में धर्म गुरु फिर भूखा मरने लगा पर मैं खुश था। दूर गांव में मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं पर अत्याचार को गाथा सुना लोगों को भड़का जरुर देता पर उससे उसका प्यास कहां बुझती। एक दिन कहने लगा मन्दिर खतरे में है हिन्दु धर्म खतरे में है। हिन्दु धर्म की रक्षा के लिए गुरु गोविन्द सिंह की फौज में भर्ती हो जाओ सिख बन जाओ। अन्नत की भी कभी रक्षा होती है । वह तो सबसे सुरक्षित है। मेरे सामने-2 हिन्दुओं की रक्षा करते-2 सिख एक समुदाय बन गया। हम फिर तीन से चार हो गए। मेरे पास ही एक गुरुद्वारा बन गया। धर्म गुरु जोरों शोरों से चार को पांच बनाने में तुले हैं क्योंकि उन्हें मालुम है पांच के बाद खून की नदियां बहेगं और धर्म गुरु खून हा तो पीते हैं। उनको प्यास अतृप्त प्यास खून से ही बुझती आई है। खून कहता है इन्सान एक है, सन्त कहते हैं इन्सान एक है और धर्मगुरु कहता है तुम दो हो, तुम तीन हो, तुम चा हो जितने भी ज्यादा टूकड़ो पर बंट जाओगे उतने ही ज्यादा धर्मगुरु पलते जाएंगे। पर अन्नत कभी नहीं बटता, उसे बांटने वाले बांटने जाते हैं ।

इन्सान जब भी इन्सान से हट कर जीने की कोशिश करता है, एक समुदाय बनाने की कोशिश करता है तब वह अन्नत से हट जाता है। फिर वह भगवान से दूर हो एक कुएं का मेंढक बनकर उसी में अपने मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारों का निर्माण करता रहता है। मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारों में बंट जाए वह अन्नत ही कैसा । भगवान को बांटने की जो कोशिश कर रहे हैं वे झूठे हैं फरेबी हैं। इन्सान को भगवान बनाने की जगह शैतान बना रहे हैं ताकि

ओर खून वहे और उनकी अतृप्त प्यास वुझती रहे।

मैं सोचता हूं कि इन्सान ने मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारे दिल में ही बनाए हाते तो कितना अच्छा होता। गुरु ग्रन्थ साहिब द्वारा बताए गए रास्ते पर चलकर ही क्या हर दिल गुरुद्वारा नहीं बन जाता। रास्ते पर चल कौन रहा है। यहां तो सब रास्ते को पूज रहे हैं। कृष्ण ने, मोहमद पैगम्बर ने, गुरु नान ने रास्ता बताया, मन्जिल बताई पर हमने रास्ते को ही पूजना शुरु कर दिया है। रास्ते पर चलोगे तो मन्ज़िल पर पहुंचोगे। धर्मगुरु नहीं चाहते आप चलो भगवान तक पहुंचो अन्नत को जाना। अन्नत को जान लोगे तो फिर उनकी खून को प्यास कैसे बुझेगी। फिर तो तुम्हें इन्सान ही भगवान लगेगा। फिर अपने भगवान पर कैसे चलाओगे गोली। फिर तुम्हें लगेगा तुम्हीं स्वर्ग अ.र नरक के निर्माता हो। फिर कौन बनाना चाहेगा नरक जिसका निर्माण तुम आज कर रहे हो। बौड़ी कुआं अलग-2 बनाने से पानी नहीं बदलता पर हिन्दु मुसलमान बनाने से इन्सान जरुर बदल रहा है।

चन्द घण्टों के वाद मेरे जख्मी शरीर को काट दिया जाएगा और इसी के साथ खत्म हो जाएगा, चार सौ साल का इतिहास जो मैंने अपनी आंखों से देखा है। आज से करीव चार सौ साल पहले राजवैद्य ईश्वर दास ने मुझे यहां लगाया था। उस समय यह बड़ा शहर एक छोटा सा गांव था। मुझे मरने का गम नहीं पर दुख है तो इस वात का कि ईश्वर दास की अपनी ही सन्तान हिन्दु सिख बन कर लड़ रही है। करीब चार किलो मीटर दूर मेरा एक दोस्त वट वृक्ष भी रहता है। उसकी उमर तो अढ़ा हजार साल हो गई है। वह भी अकाश मार्ग द्वारा मुझे इन्सान के वारे में बताता रहता है। उसने च.दह सौ साल पहले

इन्सान को हिन्दु मुस्लमान में वंटते देखा है। मुहम्मद पैगम्वर को मानने वाले मुस्लमान कहलाने लगे और वाकियों को हिन्दु कहने लगे पर मुहम्मद पैगम्वर ने कभी नहीं चाहा कि इन्सान बंट जाए। वट वृक्ष ने तो गुरु नानक देव जी को अपनी आंखों से देखा है। मानवता का सन्देश पहुंचाने वाले ने तो हमेशा चाहा कि इन्सान इन्सान बन कर रहे। वे तो मानव धर्म का ही प्रचार करते रहे। खुदा भगवान को एक ही कहने वाले ने कभी नहीं सोचा था कि उसके वेटे भगवान को भी बांट देंगे। फिर मैंने हिन्दु सिक्ख वनते देखे और आज उन्हें आपस में लड़ते देख रहा हूं। इन सव भगवान के वेटों ने कभी नहीं चाहा एक पिता की सन्तान बंट जाए। पर इनके नाम पर रोटी कमाने व ले इन्सान को इन्सान से अलग कर रहे हैं।

जिस तरह मेरा धर्म है प्राण वायु छाड़ना, छाया देना। उस धर्म को मैं कभो नहीं छोड़ता। मैं तो उनको भी छाया देता रहा हूं जो मुझे काटते हैं। मैंने तो अपनी छलनी जिस्म से भी यह काम नहीं छोड़ा। जिस तरह हम सव पीपल के पेड़ों का एक धर्म है उसी तरह इन्सान का भी एक ही धर्म है। भगवान के वेटों ने इस संसार में आकर इस संसार को उसके धर्म से परिचित करवाया पर वे उस पर तो नहीं चले पर उन के लिए गिरजाघर, मन्दिर, मस्जिद और गुरुद्वारे जरुर बना दिए। इन्सानों को समुदायों में वांट दिया। फिर लड़ने लगे आपस में। आज गुरु नानक देव जी भी वापिस आकर उन्हें कहे मूर्खो तुम मेरे नाम पर यह क्या कर रहे हो। मैंने तो भाई चारे का सन्देश दिया था और आज तुम अपने भाईयों का खून कर रहे हो तो शायद वे गुरु नानक देव जी को भी गोली मार दें क्योंकि उनका जिन्दा रहना उग्रवादियों की मौत होगी।

मेरी तरह तुम भी अपना असली धर्म पहचानो । जिस तरह हम पीपल के पेड़ों का धर्म एक ही है उसी तरह इन्सान के धर्म भी दो नहीं हो सकते । उसको भगवान के बेटों द्वारा अलग-2 तरीके से समझाने से धर्म नहीं बदल जाता । मेरी तरह इन्सान भी अपना धर्म पहचाने यहि मेरी आकांक्षा है । अलविदा

भूखा बचपन

मैं झूले में बैठा
पास बैठी एक लड़की
मगर मैं देख रहा था
दूर भीड़ में एक लड़का
बड़ी ललचाई नजरों से
देख रहा था झूले की ओर

ज्यों-2 झूला घूमता गया
मैं पास बैठे गदराये जिस्म को भूलता गया
याद आने लगा अपना बचपन
यह लड़का कोई नहीं मैं ही था
ऐसे ही खो जाता था भीड़ में
गरीब था, मेला गरीबी का उपहास
उड़ाने हर साल आ जाता था।

लोग खाते पीते
झूला झूलते और मैं बिना पैसे
तमाशा देखने वालों को ही
तमाशा समझ देखता रहता

सोचता रहता कोसता रहता
अपने माँ बाप को
जिन्होंने मेला देखने तो भेज दिया
मगर उनको क्या मालूम
उन्होंने इस नन्हें दिल पर
कितना बड़ा जख्म कर दिया
जो आज भी नहीं भरता।

उसने अपनी ललचाई नजर
झूले से फेर लीं थी
और अपने बोझिल कदमों से
शायद अपने घर वापिस जा रहा था
दिल पर एक नया जख्म लिए

लगा झूला रुक जाए
तो मैं अपने बचपन से मिल लूं
ताकि बचपन में लगा ये दाग
उसके दामन में खुशियां भर कर
धोने की कोशिश तो कर लूं

मगर झूला कहां रुकता है
और दाग कहां धुलते हैं
एक टीस सी उठी
और लड़का भीड़ में खो गया

लगा इस झूले में कूद जाऊं
या इस मेले में आग लगा दूं
आज इस मेले ने
कितने गरीबों का उपहास उड़ाया होगा
कितने नन्हें दिल को दागदार किया होगा

फिर क्यों लगते हैं मेले यहां
क्यों सजते हैं बाजार यहां
क्यों आते हैं बच्चे यहां
क्या अमीर लोग
हर गरीब का दिल दागदार कर देना चाहते हैं ।

क्या ये खूबसूरत कपड़े
इन चिथड़ों का उपहास नहीं करते

क्या तरह-2 के पकवान
इन भूखे पेटों को और भूखा नहीं करते ।

फिर क्यूं मना रहे हो मेला
क्यूं बजा रहे हो शहनाई मातम में ?
आज मेले में हजारों दिल जले
तुम देखते रहे खुशियां मनाते रहे ।

जो रोटो के लिए तरसता है
उसे कचौरियां बता दीं ।
जो फटी सलवार के लिए तरसता है
उसे साड़ियां बता दी ।

लगाओ और मेले
बच्चा था, दिल पर जख्म सह लिया ।
आखिर कब तक ?
कल जवान होगा
इसे भी मेरी तरह बचपन याद होगा ।
मैं मेले को आग लगाने की सोचता हूं
यह जहान को आग लगा देगा
फिर नहीं बच पाओगे तुम ।

गरीबी का उपहास करने वालो
गरीबी को बांट लो तुम
इस गरीब देश को मेलों की जरुरत नहीं
जरुरत है रोटो की समानता की ।

उठो इस झूले से ।
डट जाओ देश की उन्नति के लिए
ताकि हमारा बचपन भूखा न रहे

तूम जहां भी काम करते हो
दिल लगाकर करो

कल कोई भी ऐसी ललचाई नज़र न उठे
कल कोई भी बोझिल पांव वापिस न उठे
नहीं तो कल फिर उनका होगा
और तुम ज़ार की तरह मारे जाओगे

डाक्टर डिस्पैंसरी का

पेड़ों के झुरमुट के बीच
एक पिंजरा जैसा लगने वाला मकान
माना बहुत अच्छी जगह है ये
काश कवि होता कविता लिख देता
अफसोस मैं एक डाक्टर हूं
िसने पेड़ों की लम्बी कतारों के
बदले में देखी है
सिनेमा हाल में लगी लम्बो कतारं
जव खत्म होतीं थी तो बैठ जाता था
भीड़ में
लगता था मेरे गम मेरी थकाबट
कुछ कम हुए
मगर जब ये पेड़ों की लम्बी कतारं खत्म
होती हैं
तो लगता है
मेरे गम मेरी थकावट कुछ और बढ़ गई
ख्वाव कारों के लिए थे
मगर यहां तो वस भी नहीं मिलतो
लोकल बस के इन्तजार से उब कर
कभी पैदल चलना शौक होता था
मगर आज जरुरी है
क्योंकि यहां बस को आने के लिए सड़कें नहीं
पैदल चलने के लिए पगडण्डियां हैं
दूसरों का इलाज करने वाला
खूद ही वीमार है

वीमार है अपने अधूरे ख्वावों का
जो शायद कभी पूरे नहीं होंगे
आत्मिक शान्ति की तलाश में
कभी सोचता हूं
काफी हाऊस की भीड़ न सही
इन लोगों की भीड़ में हो खो जाऊं तो
अच्छा
मगर ये लोग मुझे अपने में खोने भी तो
नहीं देते ।
कभी सोचता हूं मैं तो लोक सेवक हूं
लोगों की सेवा करुंगा
मगर मेरी डिस्पेंसरीं में पड़ी
कतिपय दवाईयों का सदुपयोग
मुझ से अच्छा
मेरा कम्पोडर कर लिया करता है
ओझों का कागज पर ताविज लिखना
मेरे कागज पर दवाई लिखने
से कहीं अच्छा है
क्यूंकि वे उस ताबिज को तो
पहन लेते हैं
मगर मेरे लिखे हुए कागज को फैंक देते हैं ।
बीसवीं सदी में पैदा हुआ
लगता है यहां मेरी पोस्टिंग ने मुझे
सदियां पीछे धकेल दिया है
लालटेन की रोशनी से
रात के अन्धेरों को मिटाने का
असफल प्रयास तो करता हूं मगर

मन के अन्धेरे को मिटाने का
क्या प्रयास हो सकता है ?
सुना है ये अन्धेरे शराब से मिटते हैं
मगर यह प्रयास भी मुझे
असफल प्रयास हो लगता है ।
कभो दिल बगावत कर बैठता है ।
जब पढ़ता था तो सुना था
डाक्टर बनूंगा, कार होगी, बंगला होगा
मगर यहां कुछ भी नहीं
लागों को जि दगी दूंगा
मगर किसी को बिना इलाज मरते देखकर
मैं अपनी विवश्ता पर झूंझला उठता हूं ।
और इसके सिवाय एक डिस्पेंसरी
का डाक्टर कर ही क्या सकता है ।

पदयात्रा

26 जनवरी की सुबह 8 बज की खबरें मैं इस तरह से सुन रहा था मानों भारत रत्न न सही कम से कम पदम श्री तो डा० नरेश वैद्य को इस बार जरुर मिल जाएगी । जिस तरह फेल होने वाला अखबार में अपना रोल नम्बर ही ढुंढता रहता है और कोसता रहता है अखबार वालों को कि इतनी भी जगह अखबार में उसके लिए नसीब नही हुई, उसी तरह मैंने भी ए. एस वैद्य, रिवैरियो, वैंगसरकर के नाम रेड़ियो पर सुने पर कम्बखत एक बार फिर नरेश वैद्य का नाम गायब था। मैं भी भारत रत्न की उपलब्धि से अलंकृत होना चाहता हूं पर कोई मेरे जैसे दन्त-चिकित्सक के लिए कोई रास्ता तो बताए। हवाई जहाज में बैठने के लिए पैसे नहीं, नहीं तो खुदा से ही प्रार्थना कर लेता कि जिस जहाज में मैं बैठूं उसी जहाज का अपहरण कर लिया जाए। फिर मैं अपहरण कर्त्ताओं से उलझ कर बाकियों को बचा लूं और मरणोपरान्त अशोक चक्र का तो अधिकारी बन जाऊं। पर इतने नसीब हमारे कहां। एक बार फिर यह 26 जनबरी मेरे लिए खाली चली गई।

खबरें सुनने के बाद मैं इस तरह से मायूस हो गया कि अब कोई रास्ता नहीं रहा बड़ा बनने का। पूरी उमर दाँत ही निकालते रहो बेटा ये ईनाम तो तुम्हें कभी नसीब नहीं होंगे। मैं मायूस अपने ख्यालों में पजाब केसरी को पढ़ने लगा। पहला रंगीन पेज बदला कि सुनिल दत्त की फोटो। हमने समझा इन्हें भी कोई ईनाम मिला होगा। सुनील दत्त बम्बई से दरबार साहिब तक पद यात्रा करेंगे पढ़कर धक्का लगा। अरे हम तो हमेशा पैदल ही चलते हैं। क्यूं न हम भी अखबार वालों को बोल दें कि डा. नरेश वैद्य

मण्डी से दरबार साहिब तक पद यात्रा करेंगे । देश की एकता, अखण्डता और उग्रवाद को दूर करने के लिए हमारी यह पद यात्रा बहुत लाभकारी होगी । पद यात्रा चाहे चन्द्रशेखर की हो चाहे बाबा आमटे की, पदयात्रा का हमेशा लाभ मिलता है । पद यात्रा के दौरान चन्द्रशेखर पेपरों में छाए रहे फिर बाबा आमटे छाए रहे । भले ही उनका उद्देश्य पूरा ना हुआ हो पर मशहुरी तो मिल गई । अब सुनिल दत्त जी जब तक 2500 किलो मीटर की यात्रा 78 दिन में पूरी न कर लेगे अखबारों में छाए रहेंगे । दरबार साहिब में पहुंच कर पद यात्रा खत्म और उद्देश्य भगवान करे पूरा हो जाए ।

अगर उग्रवाद तब भी खत्म न हुआ । प्रेम, सुझबुझ और भाईचारे की सद्भावना तब भी न लाई जा सके तो मैं भी पदयात्रा का एलान कर दूंगा । मण्डी से दरबार साहिब तक । समझ नहीं आता क्या पदयात्रा ही देश की समस्या का समाधान है ? लोगों की नजर में पदयात्रा मुझे ऐसी लगी जैसे सजींवनी बूटी । हर मर्ज की एक ही दवा पदयात्रा ।

अब मैं सोचने लगा पदयात्रा अकेले तो होगी नहीं । कम से कम तीन चार आदमी होने ही चाहिए साथ । अमृतसर से मण्डी का पैदल सफर कितने किलो मीटर होगा पूछ लेगें, कितने दिन लगेंगे निकाल लेंगे, कहाँ-2 ठहरेगें तय कर लेगें । सारी समस्याओं का हल हो गया । अगली 26 जनवरी को हमारा ईनाम पक्का । डा. नरेश वैद्य की पदयात्रा जैसे ही दरबार साहिब में खत्म हुई कि उग्रवाद खत्म । भाईचारे की सद्भावना सारे फैल गई । क्या ऐसा हो सकता है ? क्या ऐंसा हो जाएगा ? पदयात्रियों को इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए । उन्हें तो भाई चारे का संदेश लेकर सिर्फ पैदल चलता है बस ।

अब मेरे साथ तीन चार आदमी कौन चलें । इनमें सब धर्मों के लोग हों तो अच्छा । पहले तो सरदार जो चाहिए । पाल स्टूडियो वाले चलेंगे क्योंकि कुछ अर्से से इनके साथ मेरी अच्छी दोस्ती चली है । इस अच्छे काम के लिए वे जल्दी ही तैयार हो जाएंगे । मण्डी में हिन्दू, सिख एकता कौन नहीं चाहता । वे हमारे फोटो भी खिचते रहेंगे जो हम छपने के लिए अखबारों में भेजते रहेंगे । क्या कवरेज होगी अखबार में हमारी पदयात्रा की । ईसाई मेरा दोस्त जौन हैं । मण्डी में एक अंग्रेजी स्कूल चलाता है । मुझे पूरा यकीन है वे भी तैयार हो जाएगें इस शुभ काम के लिए मुलसमान तो कोई नज़र नहीं आता, चलो चमन जी को ही ले चलेंगे । युथ कांग्रेस में रहकर पैदल चलने का उन्हें काफी अनुभव है । हमें देखकर तीन चार तो और भी तैयार हो जायेंगे । अब हो गई तैयारी पूरी पदयात्रा की । चलो लगे हाथ एक महीने का अर्जित अवकाश भी ले लेते हैं इस शुभ कार्य के लिए । छुटटी लेने का कारण...पदयात्रा । छुट्टियों के दिनों में स्थाई पता मण्डी से दरबार साहिब के बीच कहीं न कहीं, पूरा पता अखबारों से पता चलता रहेगा । भरकर भेज दूंगा मुख्य चिकित्सा अधिकारी को अर्जित अवकाश पत्र पर मुझे पूरा यकीन है कि यह अर्जित अवकाश कभी मजूंर नहीं होगा । कारण पद यात्रा राजनीति से प्रेरित नौकरी के नियमों का खुला उलंघन । क्यों न डा. नरेद्र वैद्य को यह सब करने के जुल्म में पद मुक्त कर दिया जाए ।

तभी तो कहता हूं पदयात्रा तो हम भी करते मगर घर पर काम था ।

भीड़

यह इस संग्रह का आखिरी लेख है और मेरे चारों तरफ बिखरे पात्र इस संग्रह में घुसने की कोशिश कर रहे हैं । आज मैं इन पात्रों और घटनाओं से इतना घिर चुका हूं कि कुछ समझ नहीं आता कि किस पात्र या घटना को इस संग्रह में जगह दूं । यहां तो हर पात्र एक कहानी सुना रहा है और ऐसी कहानी, जिससे हम कुछ सीख सकते हैं । पात्रों की इस भीड़ में मैं कुछ भी लिखने में अपने को असमर्थ पा रहा हूं । आज तो बेजान पत्थर भी एक कहानी सुनाते हुए इस भीड़ में खड़ा है । इतना शोर मच चुका है कि मुझे कुछ भी ठीक-2 सुनाई नहीं दे रहा है । कभी सोचता हूं कि क्यों न अपने पड़ौसी "अमरुद के पेड़" के बारे में ही लिख लूं । जब से इससे मिला हूं हर साल मुझे अमरुद खिलाता है । मैंने आज तक इसे कुछ नहीं दिया । कभी मुझे पेड़ आदमियों से अच्छे लगते हैं । मैंने अपने घर के बाहर कपड़े टांगने की तार भी इसके साथ बांध रखी है जो इसके शरीर में धंस गई है फिर भी इसे मुझसे कोई गिला नहीं । सुबह ही इसके चेहरे को देखकर तबीयत हरी हो जाता है । जब भी मैं बिमार पड़ा तो इसने खिड़की से झांक-2कर मेरा साथ दिया । जब मैं यहां से चला भी जाऊंगा तब भी यह पेड़ यहीं रहेगा और अमरुद खिलाकर मनुष्य जाति का सेवा करता रहेगा । मैं सोचता हूं इस लेख को लिखने के बाद मैं इससे बन्धी कपड़े टांगने की तार को आज जरुर हटा दूंगा ताकि इस पर लगा जख्म भर जाए नहीं तो मेरे जाने के बाद यह ज़ख्म मेरी क्रुरता की कहानी आने वाले से कहता रहेगा । आज इस भीड़ में खड़ा पेड़ मुझ सचमुच क्रुर साबित कर रहा है । मैं क्रुर हूं या मेरा दिल आज जरुरत से ज्यादा कोमल हो गया है

मैं नहीं जानता परन्तु इस जख्म के बारे में मैं और ज्यादा चिन्तन नहीं करना चाहता नहीं तो लेख के पूरे होने से पहले ही मुझे उठना पड़ेगा।

कभी सोचता हूं इस भीड़ में खड़े इस अस्सी वर्षीय "वहमी" के बारे में ही क्यों न लिख लूं। यह इतनी साल का आदमी कुछ क्षण भी नहीं जी सका और मरते-2 हो मर रहा है। सोचता हूं इस के बारे में लिखकर पाठकों को एक सबक जरुर मिल जाएगा कि वहम कितना बुरा होता है, जो आदमी को क्षण भर भी जीने नहीं देता। वह ख्यालों में ही कभी एक्सीडैण्ट से कभी कैंसर से कभी हार्ट अटैक से मर रहा होता है। जीते जी हो "वहमी" इतना मौतों से मर चुका होता है कि उसकी जिन्दगी का हर क्षण जीवन से खाली और मौत से भरा होता है।

पर आजकल की समस्याएं मुझे "सुक्ष्म सिंह और स्थूल सिंह" के बारे में लिखने के लिए मजबूर कर रहीं हैं। सूक्ष्म सिंह के राज्य में अच्छे संस्कारों को पूजा जाता था और स्थूल सिंह के राज्य में पैसों को। स्थूल सिंह के राज्य में सोने की खानें थीं, पट्रोल के कुएं थे परन्तु अच्छे संस्कारों की कमी की बजह से किस तरह उसके राज्य का विनाश हो गया, यह एक लम्बी कहानी है। सूक्ष्म सिंह के राज्य में कुछ भी नहीं था परन्तु अच्छे सस्कारों की बजह से किस तरह उसका राज्य समृद्धि को प्राप्त हुआ यह भी एक लम्बा कहानी है। परन्तु हर युग में अच्छे सस्कार समृद्धि की ओर ले जाते हैं। मुझे भी अपने राज्य में कोई कमी नजर नहीं आती। पहले से ज्यादा साधन हैं। पहले से ज्यादा अनाज पैदा होता है। फिर भी विनाश की ओर बढ़ रहे हैं हमारे कदम कहां अच्छे संस्कारों की कमी की बजह से तो नहीं? इस प्रश्न का उत्तर आजकल की समस्याओं का समाधान हो सकता है।

स्थूल सिंह की तरह अगर तुम भी चाहोगे कि तुम्हारा आज लोगों का खून चूस-चूसकर मोटा हो जाए तो इतिहास कल तुम्हारे मोटापे की बात नहीं करेगा अपितु इतिहास भर जाएगा ऐसी गालियों से जो हमेशा खून चूसने वालों को दी जातीं हैं । तुम आने वाली पीढ़ी को क्या दे जाओगे, फूल या कांटे इतिहास उसी से भर जाएगा ।

कभी सोचता हूं इस भीड़ में खड़े "देश द्रोही" के ही बारे में लिख लूं ताकि हम में से कोई उसकी तरह न बने । किस तरह वह अपने बुजुर्गों द्वारा मुश्किल से पाई आजादी को खतरे में डाल रहा है। एक वह था जिसने आधी धोती पहन कर भी आजादी की लड़ाई का नेतत्व किया था और आज यह है कि चन्द सिक्कों के बदले अपनी मां का सौदा कर रहा है । जब हमारा लक्ष्य ही पैसा हो जाता है तो आने वाले बच्चों का तो होगा ही । जवान होते ही वह भी तो बिक जाएगा विदेशियों के हाथ । लेकर चन्द सिक्के भून डालेगा अपने ही आदमियों को । ऐसा आज हो ही तो रहा है । आतंकवाद, उग्रवाद, बेरोजगारी की देन नहीं अपितु अच्छे संस्कारों की कमी की देन है । कौन चाहेगा अपनी माँ की दलाली का पैसा खाए । पर खा रहे हैं क्योंकि उनकी माँ से पहचान ही नहीं करवाई जा रही है । झूठे भ्रमों में डाल कर उन्हें गुमराह किया जा रहा है । आज तो माँ तुम्हारा पेट भर रही है पर कल जब भगवान न करे माँ गुलामों की जंजीरों में फिर से जकड़ ली जाए तो फिर तुम भी गुलाम नहीं बन जाओगे क्या ? फिर तो वैसी ही रोटी मिलेगी जैसी गुलामों को मिलती है । आजादी की भूख गलामी की रोटी से कहीं ज्यादा अच्छी है ।

कभी सोचता हूं मैं अपने "गुरु जी" के बारे में ही लिख लूं ताकि उनसे जो कुछ मुझे मिला है उसको आप में भी बाँट सकूं। मुझे

लगता है ऐसी कोई भी चीज नहीं जो इस भगवां कपड़े में लिपटे सन्त के सामर्थ्य के बाहर हो। उनसे जो मांगो वही मिल जाता है। रोटी, कपड़ा, मकान उनकी कभी समस्या नहीं रही और न ह आज है जो सालों पेड़ पौधों को पतियों से उदर पूर्ति करता रहा हो उसे रोटी की क्या जरुरत। जिन्होंने सालों जंगल में काट लिए हों उन्हें मकान की क्या जरुरत। अनसिला भगवां कपड़ा जब उनके तेजमय शरीर से लिपटा होता है तो लगता है कपड़े के भाग्य जाग गए। उनके पास बैठ कर शान्ति प्राप्त हो जाती है। जिन पैसों के बिना लोगों को लगता है उनकी जिन्दगी नहीं कटेगी, उन्ही पैसों को छुए बिना ही सन्त ने सम्राट की जिन्दगी जी है। जब से उन्होंने सन्यास ग्रहण किया है उन्होंने पैसों को छुआ तक नहीं। उनके आर्शीवाद से कईयों का करोड़पति बनते जरुर देखा है। कई करोड़पतियों को उनके दर्शनों को तरसते देखा है। उनकी एक झलक पाने के लिए लोग हजारों रुपया खर्च देते हैं। मुझे वे सबसे बड़े डाक्टर लगते हैं। उनका आर्शीवाद मिल जाए तो कैंसर का मरीज भी ठीक हो जाए। मेरी तरह कई उनके आर्शीवाद की वजह से कई बिमारियों से मुक्त हुए हैं। वे सर्व शक्तिशाली हैं। वे अन्नत हैं। परम आनन्द को प्राप्त मेरे गुरु जो आनन्द को बाँट रहे हैं पर आज भी एक लम्बी भीड़ क्षणिक आनन्द की माँग लिए उनके आगे हाथ जोड़ खड़ी रहती है। कईयों को मांग पैसा है। कईयों को मांग औलाद है। कईयों की मांग मान सम्मान है। क्षणिक आनन्द प्राप्त कर ये लोग फिर वापिस दुःख को ही प्राप्त होते हैं। परम आनन्द को प्राप्त सन्त परम आनन्द को बांटना चाहते हैं पर इसकी जरुरत लम्बी भीड़ में किसी को नजर नहीं आती। अनन्त को इस छोटे से लेख में लिखना, समुद्र से लोटा भर पानी लेने के ही बराबर है, फिलहाल लोटा ही सही।

कभी सोचता हूं क्यों न उस "कारखाने" के बारे में लिखूं जो अरबों रुपये खर्च करके भी हरेक देश बनाता । आप हैरान होंगे भगवान ने वह कारखाना आपके शरीर में लगाया है बिल्कुल मुफ्त । आप खाना खाते हैं और उससे खून बनता है । ऐसा हो कारखाना जो खाना खाकर खून बना सके, खरबों रुपये खच करके भी बन सके तो इस पृथ्वी पर हर देश बनाना चाहेगा । खाना डालते जायेंगे, खून बनता जाएगा और बोतलें भर-2 बिकती जायेंगी । मझे पूरी उम्मीद है इस कारखाने का निर्माण किसी भी कीमत में घाटे का सौदा नहीं । मुझे लगता है जिस के पास खरबों का कारखाना हो वह खरब पति तो है ही । क्या तब हम सब खरबपति हैं ? यह सब अपनी-अपनी समझ की बात है, मुझे तो ऐसा ही लगता है ।

इस भीड़ में सबसे ज्यादा हमदर्दी मुझे "चोर" से है । मुझे उसके बारे में जरुर कुछ लिखना चाहिए । इस चोर को हमने कई बार रँगे हाथ पकड़ा पर कभी पुलिस को सौंपने को नहीं सोची । हर न्याय प्रिय इन्सान इसे चोरी की हुई चीज देकर इज्जत के साथ बरी कर देगा । यह चोर दमें का मरीज, हस्पताल से दमें की दवाईयाँ चुराता है । गरीब है बाजार से खरीद नहीं सकता । हस्पताल वाले भी तीन दिन की दवाई दे देते हैं जिससे उसका गुजारा नहीं होता । बीच में हस्पताल में जब दवाई खत्म हो जाती है तो बहुत मुश्किल हो ती थी उसे । एक दिन वक्त देखकर उसने डिस्पेंसरी से काफी गोलियां और इन्जैक्शन चरा लिए । पकड़ा नहीं गया । बहुत दिन आराम से गोलियों के सहारे सांस लेता रहा । फिर सांस लेने का उसे आसान तरीका आ गया । अब उसे डाक्टर के आगे गिड़गिड़ाने की जरुरत नहीं पड़ती थी : एक बार पकड़ा गया थोड़ी डांट पड़ी छोड़ दिया गया । दसरी

वार, तीसरी वार पकड़ कर भी कोई क्या कर सकता था। आखिर सांस लेने का तो सब को हक है। अब भी उसे सांस लेना मुश्किल होता है हस्पताल से चराई गोलियां आज भी उसके काम आतीं हैं। अब उसने तीन दिन को गोलियां लेनी बन्द कर दी हैं पर कम्पौंडरों ने भी सोने की तरह दमें की गोलियां लाकर में रखनो शुरु कर दी हैं। मगर इस चोर को कहानो भो तो बहुत लम्बी है।

हर पात्र की कहानी लम्बी है और इस संग्रह में जगह कम। यदि आपको यह संग्रह "दर्शन" पसन्द आया तो मैं अपनी कलम से इस भीड़ को अगले संग्रह में बांधने की कोशिश जरुर करुंगा। फिलहाल मुझे अपने दोस्त अमरुद के पेड़ से तार छुड़ाने दो।

—नरेश